CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Module PH 13

|| the gurukul ||

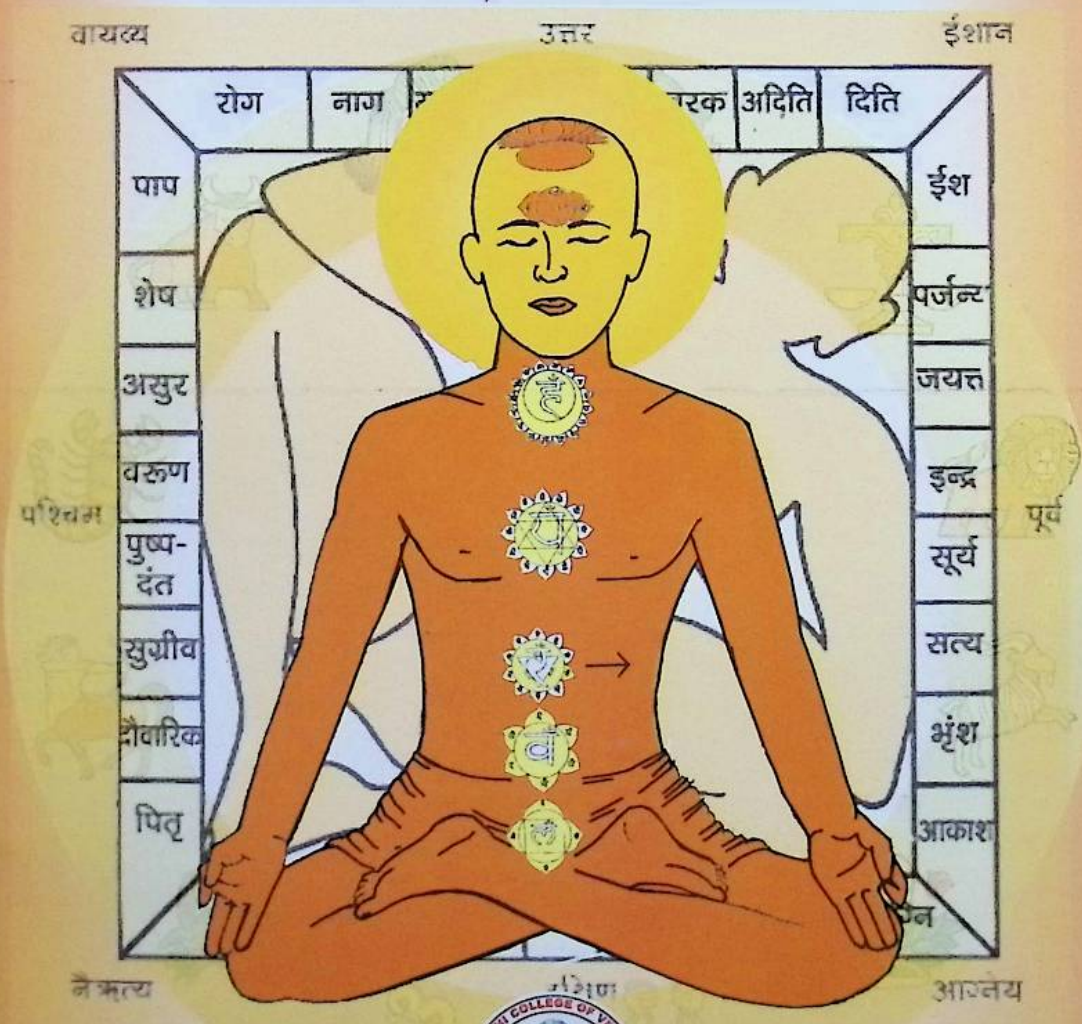

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY

The Harmony of Space & Elegance

A Unit of KNS Society

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Vedic Palmistry
Module - 13

अनुक्रमणिका

अध्याय 1	:	कालसर्प योग	3
अध्याय 2	:	मांगलिक दोष	26
अध्याय 3	:	शनि की साढ़े साती	44
अध्याय 4	:	पितृ दोष	64
अध्याय 5	:	भूमि दोष	72
अध्याय 6	:	दैविक दोष	75
अध्याय 7	:	ज्वालामुखी मूल	89
अध्याय 8	:	नक्षत्र व योगों से जनित दोष	91
अध्याय 9	:	मेलापक दोष	93
उत्तर तालिका मॉड्यूल 9			102
स्व अभ्यास 10			104

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कालसर्प योग

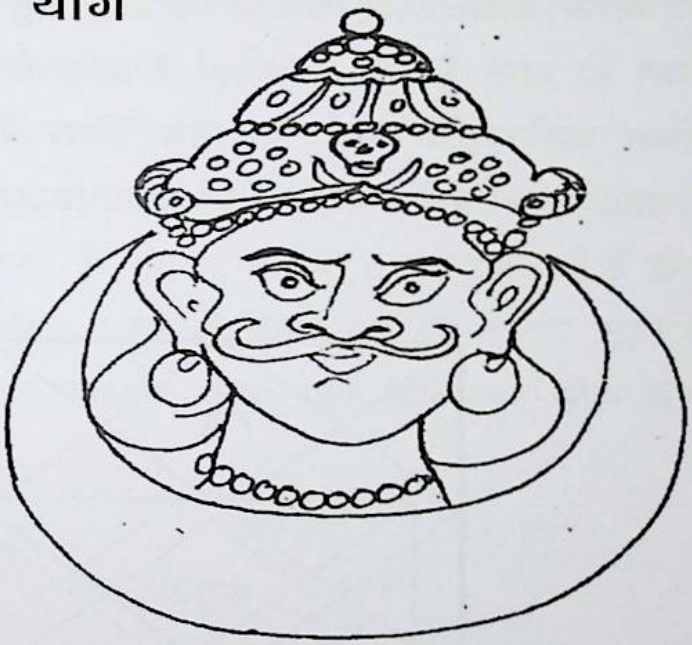

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जन्म पत्रिका में जब सभी ग्रह राहु एवं केतु के मध्य स्थित हो जाते हैं, तो कालसर्प योग बनता है। राहु एवं केतु हमेशा वक्री गति करते है। अतः जिस राशि में स्थित होते हैं वहा से गोचरीय भ्रमण के द्वारा उससे पिछली राशि में जाते है।

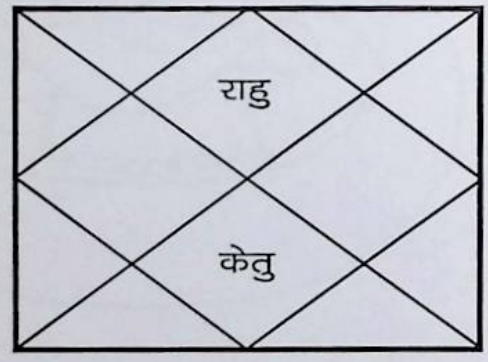

पूर्ण कालसर्प योग में सभी ग्रह राहु–केतु के एक ओर स्थित होते है। यदि चंद्रमा राहु–केतु की परिधि से बाहर निकला हो, तो उसे अर्ध कालसर्प योग कहा जाता है।अर्ध कालसर्प योग भी जातक पर सामान्य दुष्प्रभाव ड़ालता है।

राहु को कालसर्प का मुख तथा केतु को कालसर्प की पुच्छ माना जाता है। यदि सभी ग्रह राहु एवं केतु के एक ओर इस प्रकार स्थित हों कि जन्म के बाद गोचर के द्वारा राहु को भ्रमण उन ग्रहों को आगामी 7 वर्षो में ग्रसित कर ले, तो पूर्ण कालसर्प योग बनता है। यदि जन्म के उपरान्त राहु का गोचर 7 वर्ष तक किसी अन्य ग्रह के ऊपर नहीं हो, तो कालसर्प योग नहीं बनता। जन्म पत्रिका में राहु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिस भाव में स्थित हो, उसी के अनुरूप कालसर्प योग भिन्न–भिन्न प्रकार के होते हैं।

निम्नलिखित पत्रिका में राहु लग्न में केतु सप्तम भाव में स्थित है। सूर्य–चंद्र आदि यदि सप्तग्रह राहु एवं केतु के एक ओर सप्तम भाव से लेकर लग्न तक स्थित हैं। इस स्थिति में राहु का गोचर जन्म के सात वर्ष के अन्दर सूर्यादि सप्तग्रहों के ऊपर हो जाएगा अतः पूर्ण कालसर्प योग बन रहा हैं।

निम्नलिखित पत्रिका में भी लग्न में राहु एवं सप्तम भाव में केतु स्थित है तथा सभी ग्रह राहु एवं केतु के एक ओर लग्न से लेकर सप्तम भाव तक स्थित है। जन्म के बाद वाले वर्षो में राहु का गोचरीय भ्रमण किसी भी ग्रह के ऊपर नहीं होगा क्योंकि राहु का गोचर लग्न से क्रमशः द्वादश भाव, एकादश भाव, दशम भाव, नवम भाव, अ टम भाव से होता हुआ सप्तम भाव में प्रवेश करेगा। अतः इस कुण्ड़ली में सूर्य, चंद्र आदि ग्रहों के राहु केतु के एक ओर स्थित होने पर भी आंशिक कालसर्प योग बनता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि दो या दो से अधिक ग्रह राहु–केतु की परिधि से बाहर निकले हो, तो कालसर्प योग नहीं बनता है।

कालसर्प योग 12 प्रकार के होते है। ये कालसर्प योग निम्न है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्कोटिक कालसर्प योग

यदि लग्न में राहु एव सप्तम भाव में केतु हो एवं सभी ग्रह सप्तम भाव से लेकर लग्न तक स्थित हों, तो कार्कोटिक कालसर्प योग बनता है।

कार्कोटिक कालसर्प योग का प्रभाव जातक के स्वास्थ्य, जीवनस्तर, कार्य एवं व्यक्तित्व पर पड़ता हैं।

कार्कोटिक कालसर्प योग का दुष्प्रभाव जातक को जन्म के 18 वर्ष की आयु के पश्चात् मिलते है।

कार्कोटिक कालसर्प के प्रभाव से जातक का दाम्पत्य सुख मध्यम होता है। जातक क्रोधी, अभिमानी एवं स्वार्थी होता है, जिसके कारण उसका पत्नि से सामंजस्य नहीं बैठ पाता है।

कार्कोटिक कालसर्प योग में यदि सप्तमेश राहु के साथ लग्न में युति करें तो जातक का दांपत्य जीवन प्रायः अशांत व दुखी रहता है। जातक पत्नि के कारण मानसिक कष्ट पाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्कोटिक कालसर्प में जातक अपने ही कार्यों के कारण अपने कार्य क्षेत्र में रूकावटे खड़ी कर लेता है। अनैतिक कार्यों से यथासंभव जातक को दूर रहना चाहिये।

शंखनाद कालसर्प योग

यदि द्वितीय भाव में राहु तथा अष्टम भाव में केतु स्थित हो एवं अन्य ग्रह अष्टम भाव से लेकर द्वितीय भाव के मध्य स्थित हों तो शंखनाद कालसर्प योग बनता है। शंखनाद कालसर्प योग का प्रभाव जब भी जातक राहु की महादशा या अंर्तदशा में आता है तब होता है। शंखनाद कालसर्प का प्रभाव जातक के कुटुंब व संचित धन पर पड़ता है। जातक की वाणी, संपत्ति व पैतृक धन पर भी शंखनाद कालसर्प योग का प्रभाव रहता है। शंखनाद कालसर्प के दुष्प्रभाव से जातक की वाणी एवं खान-पान दूषित होने लगता है। उसके पैतृक धन व संपत्ति की हानि होती है। कुटुंबीजनों से विवाद एवं आर्थिक दृष्टि से जातक को संघर्ष का सामना करना पड़ता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

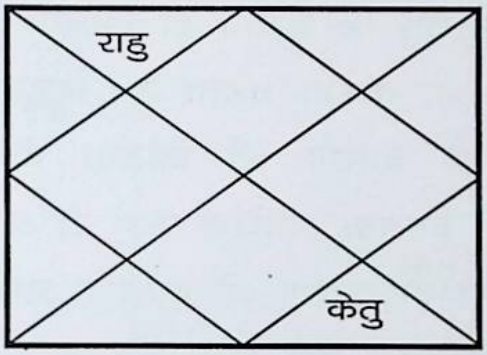

शंखनाद कालसर्प योग का प्रभाव जातक की वाणी, कुटुंब, पैतृक धन सम्पत्ति एवं संचित धन के ऊपर पड़ता है।

शंखनाद कालसर्प योग के प्रभाव से जातक अभक्ष्य वस्तुओं मांस–मदिरा आदि का सेवन करता है, जिसके फलस्वरूप उसका दांपत्य जीवन तबाह होता है। ऐसे जातक परिवार से दूर रहते है।

यदि सप्तमेश राहु के साथ द्वितीय भाव में स्थित हो तो जातक के वैवाहिक जीवन में ससुराल पक्ष को लेकर चिंता रहती है।

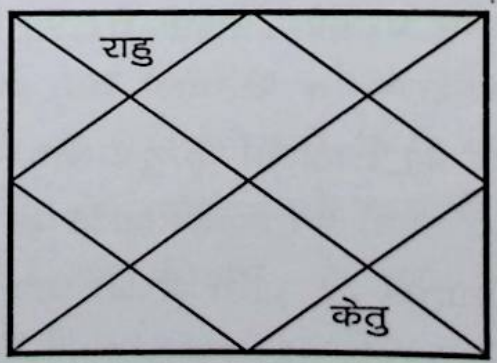

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शंखनाद कालसर्प के प्रभाव से जातक को व्यवसाय में धनहानि का सामना करना पड़ता है। कुटुम्बीजनों से बाधा एवं परेशानियों के कारण भी जातक के कार्य क्षेत्र में रूकावटें आती है। जातक आर्थिक रूप से असंतुष्ट रहता है। अपनी दूषित वाणी के कारण भी जातक अपने कार्य क्षेत्र में स्वयं ही बाधाएं उत्पन्न कर लेता है।

पातक कालसर्प योग

यदि तृतीय भाव में राहु तथा नवम भाव में केतु स्थित हो एवं अन्य सभी ग्रह नवम भाव से लेकर तृतीय भाव के मध्य स्थित हो तो पातक नामक कालसर्प योग निर्मित होता है। पातक कालसर्प युक्त जन्म पत्रिका वाले जातक के युवावस्था में यदि राहु महादशा या अंतर्दशा में अशुभ प्रभाव मिलने शुरू होते है। पातक कालसर्प योग जातक के पराक्रम को विशेष प्रभावित करता है। जातक के भाईयों पर व उनसे उसके संबंध व सहयोग का प्रभाव भी इस पर पड़ता है। पातक का कालसर्प के दुष्प्रभाव से जातक धैर्यहीन एवं लापरवाह हो जाता है। उसके कार्यो में अनसोचे व्यवधान आते रहते है। जातक को यात्रा में भी प्रायः असफलता होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

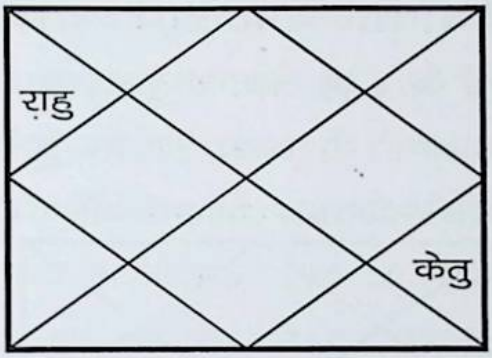

पातक कालसर्प युक्त जन्म पत्रिका वाले जातक का दांपत्य जीवन उसके छोटे भाई–बहनों के कारण क्लेशपूर्ण रहता है। जातक परस्त्रियों से सम्पर्क रखने के कारण भी दांपत्य जीवन में बाधांए खड़ी करता है।

यदि सत्पमेश राहु के साथ तृतीय भाव में हो तो जातक का दांपत्य सुख मध्यम रहता है।

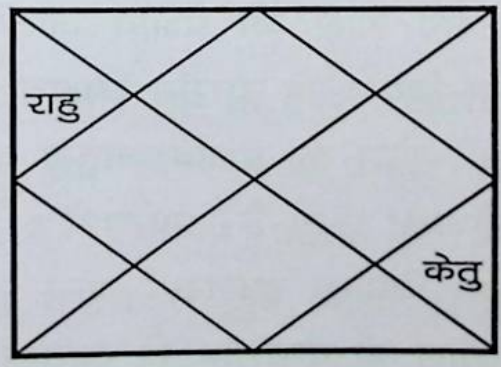

पातक कालसर्प द्वारा प्रभावित जातक स्वयं के दुस्साहस एवं अनैतिक प्रवृत्ति के कारण अपने कार्य क्षेत्र में बाधाओं का सामना करता है। ऐसे जातक को यात्राओं से जुड़े कार्यो में हानि होती है। क्रय–विक्रय से जुड़े कार्यो में उसे असफलता प्राप्त होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषाक्त कालसर्प योग

यदि राहु चतुर्थ भाव में तथा केतु दशम भाव में स्थित हो व अन्य ग्रह इन भावों के मध्य अर्थात तृतीय से दशम के मध्य हो तो विषाक्त नामक कालसर्प योग बनाते हैं।

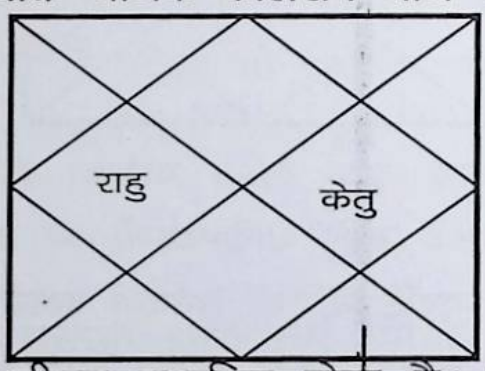

पारिवारिक जीवन प्रभावित होता है। वाहन, सम्पत्ति, सामाजिक मान प्रतिष्ठा, मानसिक स्थिति को यह कालसर्प योग प्रभावित करता है।

विषाक्त कालसर्प योग का प्रभाव जातक की आयु के चौथे वर्ष से अथवा विवाह के उपरांत मिलना प्रारंभ हो जाता है। विषाक्त कालसर्प योग का प्रभाव जातक की मान, प्रतिष्ठा एवं माता पर विशेषकर होता है। पारिवारिक जीवन, भवन व वाहन सुख पर भी विषाक्त कालसर्प योग प्रभावी रहता है। विषाक्त कालसर्प योग के दुष्प्रभाव से जातक जीवन में कष्ट पाता है। जातक को माता के सुख में कमी होती है। ऐसा जातक स्थायी रूप से एक स्थान पर नहीं रह पाता। जातक की विचारधारा दूषित होती हैं एवं उसे कभी भी मानसिक एवं पारिवारिक सुख-शांति नहीं मिलती। जातक को सम्पत्ति, घर एवं वाहन सुख में भी बाधा आती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषाक्त कालसर्प योग युक्त जन्म पत्रिका में यदि चतुर्थ भाव में राहु के साथ सप्तमेश की युति के कारण जातक का पारिवारिक जीवन सुखद नहीं होता है। विवाह के बाद जातक की पत्नि का उसके परिवार के सदस्यों से तनाव एवं विवाद के कारण जातक की मानसिक सुख–शांति भंग हो जाती है। विवाह के बाद जातक को घर से दुर रहना पड़ सकता है।

चतुर्थ भाव में स्थित राहु के कारण जातक को पारिवारिक कारणों से कार्य क्षेत्र में अनेक प्रकार की बाधाओं एवं रूकावटों का सामना करना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति को भूमि–सम्पत्ति एवं वाहन से जुड़े कार्यो मे हानि होती है।

शेषनाग कालसर्प योग

पंचम भाव में राहु एवं एकादश भाव में केतु स्थित हो तथा अन्य ग्रह एकादश भाव से लेकर पंचम भाव के मध्य स्थित हो तो शेषनाग नामक कालसर्प योग का निर्माण होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

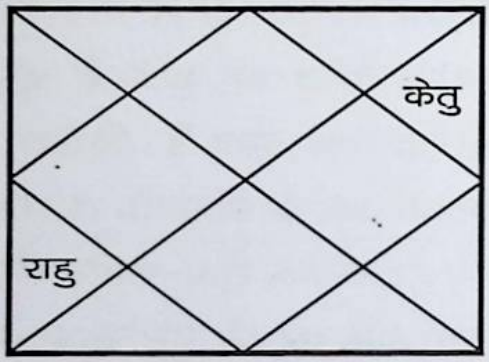

शेषनाग कालसर्प योग में जातक युवावस्था में जब भी राहु की महादशा या अतंर्दशा से गुजरता है तब इस़ योग का विशेष दु प्रभाव पड़ता है। शेषनाग कालसर्प योग का प्रभाव जातक की विद्या, अध्ययन व संतान पर पड़ता है।

शेषनाग कालसर्प योग के प्रभाव से जातक को प्रेम–प्रसंगों में धोखा एवं निराशा का सामना करना पड़ता है। जातक की बुद्धि भ्रमित हो जाती है तथा उसे निरन्तर भटकना पड़ता है।

पंचम भाव में राहु के साथ सप्तमेश की युति हो तो जातक प्रेम प्रसंगों में पड़ने के कारण अपने दांपत्य जीवन को बर्बाद कर लेता है। विवाह के बाद भी जातक के प्रेम–प्रसंग चलते हैं जिसके फलस्वरूप जीवनसाथी के साथ उसके संबंध खराब हो जाते है।

पंचम भाव में स्थित राहु के कारण जातक अकस्मात् धनी बनने की लालसा रखता है, जिसके लिये वह जोखिमपूर्ण कार्य करने से भी नहीं हिचकिचाता। प्रेम–प्रसंग में फंसकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

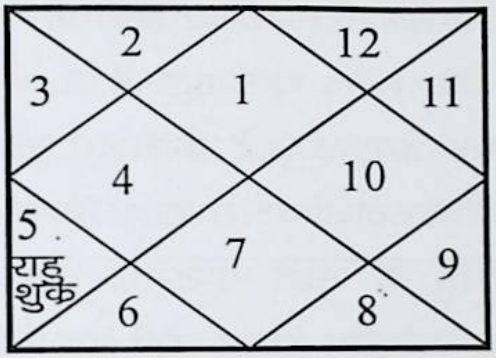

भी जातक अपने लिये परेशानियां खड़ी कर् लेता है। उपर्युक्त कारणों से जातक को कैरियर मे अनेक प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

वासुकी कालसर्प योग

षष्ठ भाव में राहु तथा द्वादश भाव में केतु स्थित हो, अन्य सभी ग्रह द्वादश भाव से लेकर षष्ठ भाव तक स्थित होने पर वासुकी नामक कालसर्प योग निर्मित होता

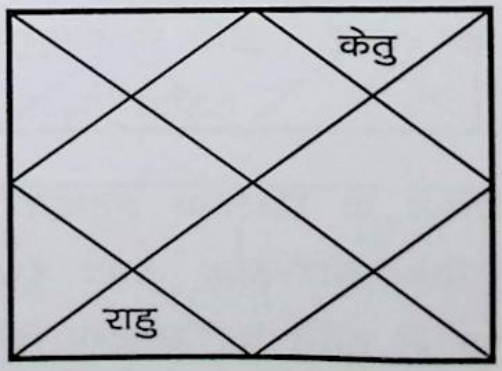

वासुकी नामक कालसर्प योग का प्रभाव जातक को बाल अवस्था से ही प्राप्त होता है। जातक किसी अज्ञात कारण से रोग ग्रस्त रहता है। वासुकी कालसर्प योग के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रभाव से जातक का स्वास्थ्य खराब होता है। जातक नशीली वस्तुओं का सेवन करता है। कुसंगति में पड़ने के कारण वह विवादों में फंस जाता है। वासुकी कालसर्प योग से प्रभावित जातक को पशु–पक्षियों की सेवा से लाभ प्राप्त हो सकता है।

षष्ठ भाव में राहु के साथ सप्तमेश की युति के कारण जातक की पत्नि का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता है। जीवनसाथी के साथ जातक के विवाद होते रहते है।

षष्ठ भाव मे स्थित राहु के कारण जातक के शत्रु व विरोधी जातक के काये क्षेत्र में रूकावट व बाधा का कारण बनते है।

गुप्त शत्रु जातक के खिलाफ षड़यंत्र करते है। ऐसे जातक को रोग पीड़ा, चोर–ड़ाकू आदि दुष्ट व्यक्तियों के कारण भी व्यवसाय में हानि का सामना करना पड़ता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पद्म कालसर्प योग

सप्तम भाव में राहु एवं लग्न में केतु स्थित हो, साथ ही सभी ग्रह लग्न से लेकर सप्तम भाव पर्यन्त स्थित हो, तो पद्म नामक कालसर्प योग का निर्माण होता है।

पद्म नामक कालसर्प योग का विशेष प्रभाव विवाह के बाद प्रारंभ हो जाता है। पद्म कालसर्प योग विशेषकर जातक के दांपत्य जीवन पर प्रभावी रहता है। अनैतिक संबंधों के कारण भी जातक को परेशानियों को झेलना पड़ता है पद्म कालसर्प योग से पीड़ित जातक को अपने ससुराल पक्ष को प्रसन्न रखना चाहिये।

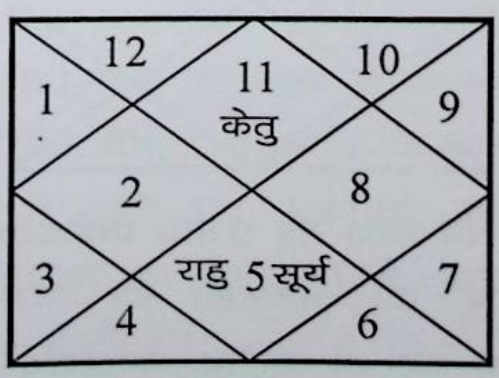

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सप्तम भाव में राहु के साथ सप्तमेश की युति होने पर जातक का दांपत्य जीवन सुखमय नहीं होता। जातक की पत्नि उग्र एवं जिद्दी स्वभाव की होती है।

पद्म कालसर्प योग से जातक का सहकर्मियों से विवाद तथा व्यवसाय साझेदारों के कारण हानि एवं रूकावटें होती है। ऐसे जातक को विवाह के बाद विशेषकर कार्य क्षेत्र कें रूकावटों एवं परिवर्तनों का सामना करना पड़ता है।

कुलिक कालसर्प योग

अष्टम भाव में राहु एवं द्वितीय भाव मे केतु स्थित हो तथा सभी ग्रह द्वितीय भाव मे स्थित केतु से लेकर अष्टम भाव में स्थित राहु के मध्य स्थित हो तो कुलिक नामक कालसर्प योग का निर्माण होता है।

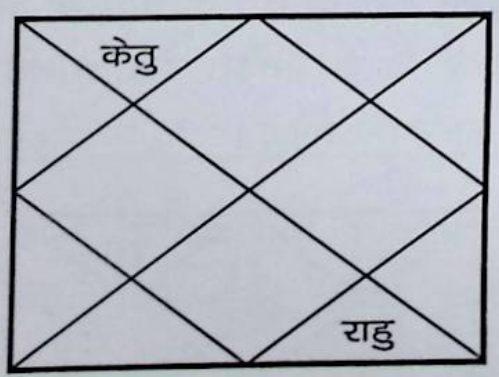

कुलिक कालसर्प योग का प्रभाव विशेषकर बाल अवस्था में होता है। राहु की महादशा या अंर्तदशा विशेषकर पौढ़ावस्था में आने पर भी कुलिक कालसर्प योग के प्रभाव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिलते है। कुलिक कालसर्प योग आयु एवं अकस्मात् लाभ या हानि पर प्रभावी होता है।

कुलिक नामक कालसर्प योग के दुष्प्रभाव से जातक अकस्मात् शारीरिक कष्ट, दुर्घटना, गिरने से चोटादि से कष्ट प्राप्त करता है। जातक के जीवन में स्थिरता नहीं होती तथा उसे परदेस जाना पड़ता है।

अष्टम भाव मे स्थित राहु के साथ सप्तमेश की युति होने पर जातक को विवाह के बाद अनेक विवादों का सामना करना पड़ता हैं। उसके जीवन में उथल–पुथल रहती है।

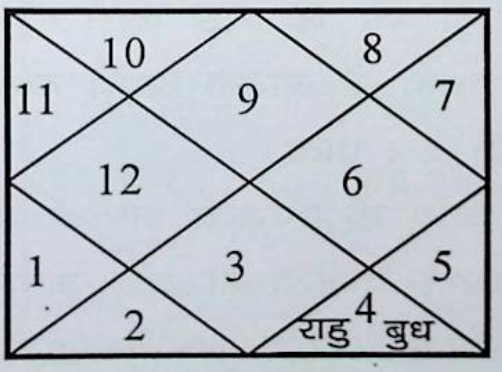

कुलिक कालसर्प योग के प्रभाव से जातक को आकस्मिक दुर्घटनाओं, प्राकृतिक आपदाओं आदि के कारण कार्य क्षेत्र मे बाधा, व्यवसाय मे हानि एवं रूकावटों का सामना करना पड़ता है। ऐसे जातक को जुएं, लॉटरी, दलाली आदि कार्यो में धन की हानि होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महापद्म कालसर्प योग

नवम भाव में राहु तथा तृतीय भाव में केतु स्थित हो तथा अन्य सभी ग्रह तृतीय भाव में स्थित केतु से लेकर नवम भाव में स्थित राहु के मध्य स्थित हो, तो महापद्म कालसर्प योग का निर्माण होता है।

नवम भाव से बनने वाले महापद्म नामक कालसर्प योग के प्रभाव से जातक के जन्म के बाद पिता को अनेक प्रकार के कष्टों का सामना करना पड़ता है।

महापद्म कालसर्प योग के कारण जातक का भाग्य प्रभावित होता है। पितृ, पौत्र, धर्म, कर्म, कर्त्तव्य एवं पुत्र–पौत्रादि के सुख को भी यह कालसर्प योग प्रभावित करता है। इसके प्रभाव से जातक अपने कर्त्तव्यों को किसी कारणवश पूर्ण नहीं कर पाता।

42 वर्ष की आयु के उपरान्त जातक की बुद्धि भ्रमित हो जाती है, जिसके फलस्वरूप वह अपने कर्त्तव्यों का निर्वहन नहीं कर पाता। मर्यादा के विरूद्ध चलने के कारण अपयश का सामना करना पड़ता है। भाग्यवश उसे अनेक दुःख प्राप्त होते है। ऐसे जातक को कभी भी अपने कुल, धर्म, गुरूजनों एवं पूज्य व्यक्ति का अपमान नहीं करना चाहिये।

नवम भाव में स्थित राहु के साथ सप्तमेश की युति के कारण जातक को विवाह के बाद दुर्भाग्य घेर लेता है। जातक अपने धर्म एवं कर्त्तव्यों से विमुख हो जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिसके फलस्वरूप उसके अनेक प्रकार की बाधाएं आती है। उन्नति में अवरोध उत्पन्न होते है।

महापद्म कालसर्प के प्रभाव से जातक को भाग्यवश कैरियर मे अनेक प्रकार की बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

तक्षक कालसर्प योग

दशम भाव में राहु तथा चतुर्थ भाव में केतु हो तथा सभी ग्रह चतुर्थ भाव से लेकर दशम भाव तक केतु एवं राहु के मध्य स्थित हों, तो तक्षक नामक कालसर्प योग निर्मित होता है।

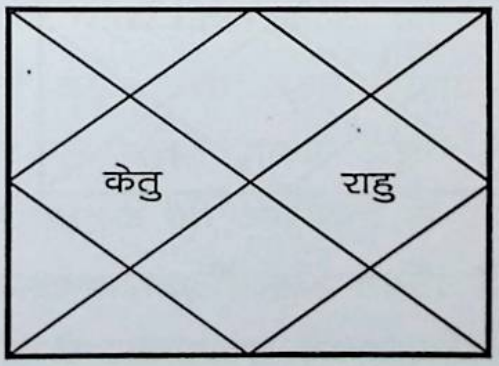

दशम भाव से बनने वाला तक्षक नामक कालसर्प योग के प्रभाव से जातक के जन्म के बाद पिता के कुटुंबीजनों को कष्ट होता है। युवावस्था में एवं प्रौढ़ावस्था में जब भी जातक के जीवन में राहु की महादशा या अन्तर्दशा आती है, तो जातक को विशेष दुष्प्रभाव प्राप्त होते है।

तक्षक कालसर्प योग का प्रभाव जातक की आजीविका, राज्यपक्ष, मान-प्रतिष्ठा आदि से जुड़े मामलों पर पड़ता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक को आजीविका के क्षेत्र में संघर्ष का सामना करना पड़ता है। जातक पापकर्मो में सलंग्न रहता है।

दशम भाव में स्थित राहु के साथ सप्तमेश की युति के कारण विवाह के बाद जातक की मान–प्रतिष्ठा भंग होती है। जातक के कार्यक्षेत्र में व्यवधान आते है। जातक का जीवनसाथी अव्यावहारिक एवं जिद्दी होता है, जिसके फलस्वरूप उसका जीवन सुखमय नहीं होता है।

दशम भाव में स्थित राहु के कारण जातक पापकर्मो में फंसकर अपने कार्य क्षेत्र को तबाह कर लेता है। ऐसे जातक एक कार्य में संतुष्ट नहीं हो पाते। ऐसा जातक विभिन्न संस्थां एवं संगठनों से जुड़ता है जिसके कारण उसे लाभ होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनंत कालसर्प योग

एकादश भाव में राहु एवं पंचम भाव में केंतु स्थित हो तथा अन्य सभी ग्रह पंचम भाव मे केतु के आगे से एकादश भाव में स्थित हों, तो अनंत नामक कालसर्प योग निर्मित होता है।

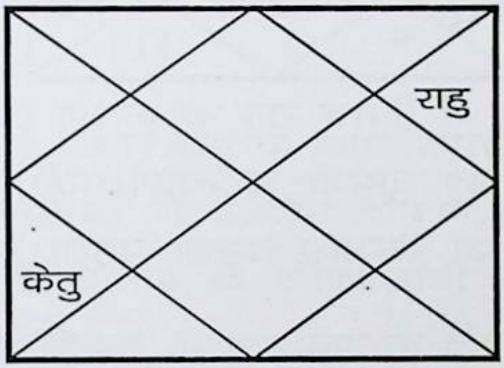

अनंत कालसर्प योग का प्रभाव जातक की आमदनी, मित्रवर्ग, बड़े भाई–बहन तथा महत्वाकांक्षाएं पर पड़ता है।

एकादश भाव से बनने वाला अनंत नामक कालसर्प योग के प्रभाव से जातक की आमदनी में रूकावटें आती है। जातक की महत्वाकांक्षाएं पूरी नहीं होती। मित्रों एवं निकट संबंधियों के वियोग का सामना जातक को करना पड़ता है। जातक को बड़े भाई का सुख नहीं मिल पाता।

एकादश भाव में स्थित राहु के साथ सप्तमेश की युति के प्रभाव से मित्र मण्ड़ल में व्यस्त रहने के कारण जातक के दांपत्य जीवन में बाधाएं आती है। जातक अपने कार्य में इतना व्यस्त रहता है कि जीवनसाथी के प्रति उदासीन हो जाता है फलस्वरूप उसके वैवाहिक जीवन में तनाव उत्पन्न होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

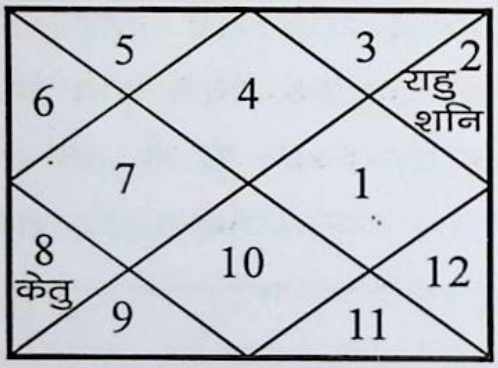

एकादश भाव में स्थित राहु के कारण जातक को निकट संबंधियों, मित्रों एवं अपनी महत्वकांक्षाओं के कारण कार्य क्षेत्र मे बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

शंखपाल कालसर्प योग

द्वादश भाव में राहु तथा षष्ठ भाव में केतु स्थित हो तो तथा अन्य सभी ग्रह षष्ठ भाव में स्थित केतु से लेकर द्वादश भाव में स्थित राहु तक स्थित हों, तो शंखपाल नामक कालसर्प योग का निर्माण होता हैं।

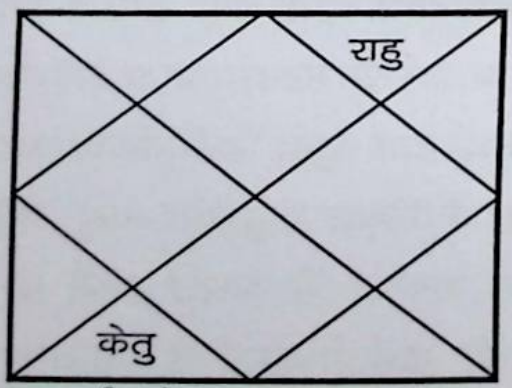

शंखपाल कालसर्प योग का प्रभाव जातक को 12 वे वर्ष व उसके उपरांत विशेष पड़ता है। शंखपाल कालसर्प योग के प्रभाव से जातक लंबी यात्राओं, विदेश निवास, धन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का व्यय तथा शयन सुख प्रभावित होते हैं।

शंखपाल कालसर्प के दुष्प्रभाव से जातक अनैतिक कार्यों में धन का अपव्यय करता है। परदेश में जातक को अभावग्रस्त जीवनयापन करना पड़ता है। जातक को दूसरों के अधीन रहना पड़ता है। जातक के धन का अकस्मात् व अपव्यय होता है।

द्वादश भाव में स्थित राहु के साथ सप्तमेश की युति के कारण जातक व्याभिचार में फंसकर दांपत्य जीवन को बर्बाद कर लेता है। ऐसे जातक के जीवनसाथी का स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहता। विवाह के बाद जातक को आर्थिक रूप से परेशानी का सामना करना पड़ता है।

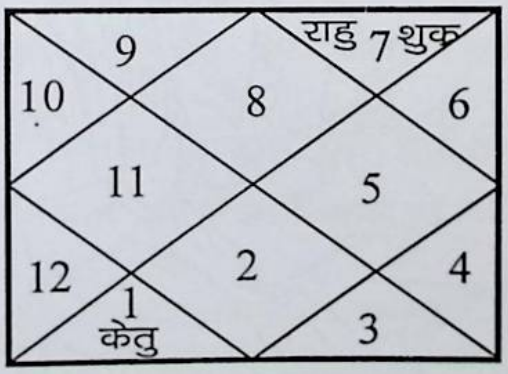

द्वादश भाव में स्थित राहु के कारण जातक अपनी लापरवाही एवं आचरण के कारण अपने कार्य क्षेत्र में रूकावटें खड़ी कर लेता है। समय-समय पर जातक को धनहानि का सामना करना पड़ता है। ऐसा जातक अनेक यात्राएं करने के कारण परेशानी में फंस जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मांगलिक दो।

मंगल कालपुरूष का पराक्रम एवं नवग्रहों का सेनापति है। इस प्रभावशाली ग्रह का सौरमंड़ल में चतुर्थ स्थान है। मंगल ग्रह पुर्ल्लिग और जीवन शक्ति से भरपूर हैं। इसकी रश्मियां भी उग्रता और उत्तेजना उत्पन्न करती है। सिर, फेफड़ा, दिमाग, रक्त कोशिकाओं व रक्त पर इसका सीधा प्रभाव पड़ता है।

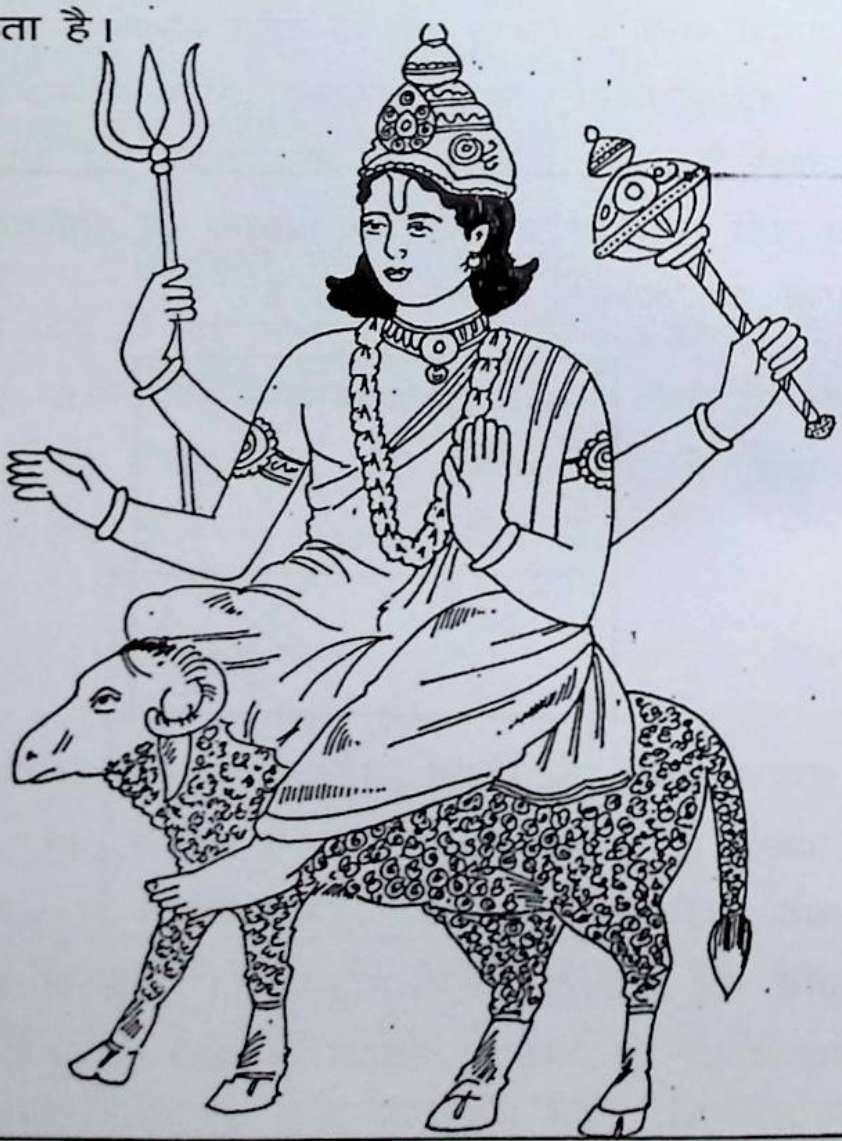

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर एवं कन्या की जन्म पत्रिकाओं के मिलान (मेलापक) में इसके द्वारा उनके रूधिर वर्ग (ब्लड़ ग्रुप) का मिलान किया जाता है।

मंगल स्वयं पापग्रह है और पापग्रहों का प्रतिनिधि भी है। क्रूर ग्रह सूर्य एवं दुष्ट ग्रह शनि, राहु व केतु भी पापग्रह है बुध भी इन पापग्रहों के साथ रहने पर पापग्रहों जैसा ही प्रभाव दिखाता है, किन्तु यथास्थान ये पापग्रह मंगल के दोष को न्यून, अधिक, निर्मूल व समाप्त भी करते है। पापग्रहों की समानता होने पर यदि विवाह किया जाता है, तो दीर्घायु होती है। पुत्र, धन, सम्पत्ति के स्वामी बनते है। यदि असमानता की स्थिति बनती है, तो घोर संकट, दुःख, मृत्युतुल्य कष्ट या मृत्यु का भय बना रहता है।

प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों पर मंगल होने से पुरूष समंगल और स्त्री मंगली कहलाती है।

यदि पुरूष का जन्म लग्न में मंगल होता, है तो वह पाग मंगली तथा यदि कन्या का जन्म मंगल में होता है तो वह मांग मंगली कहलाती है। पाग मंगल एवं मांग मंगली एक दूसरे के लिए शुभ, हितकर और जीवन–कारक मानी जाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लड़का

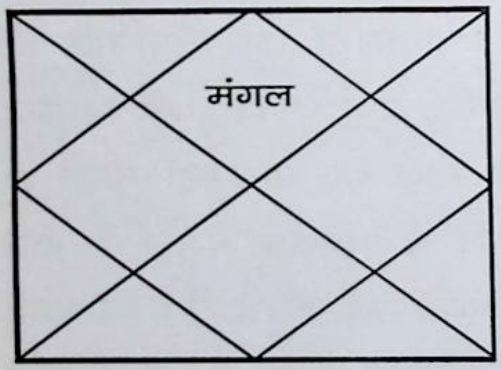

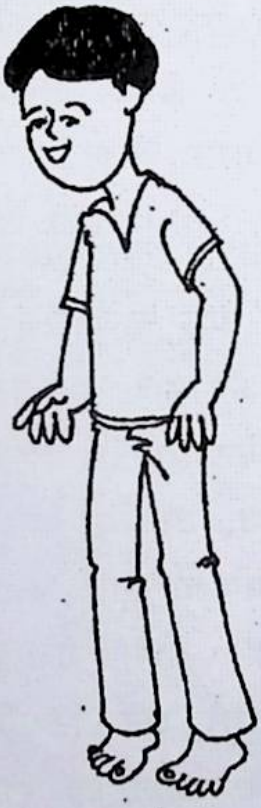

लड़की

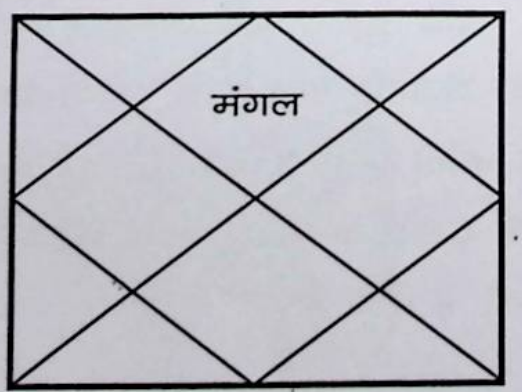

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

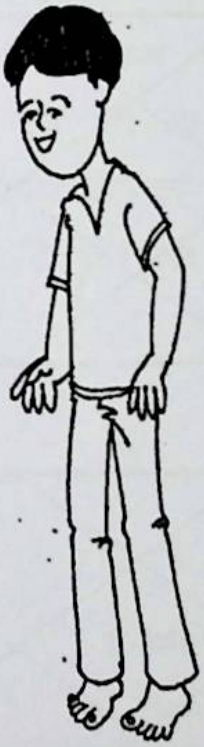

लड़की

लड़का

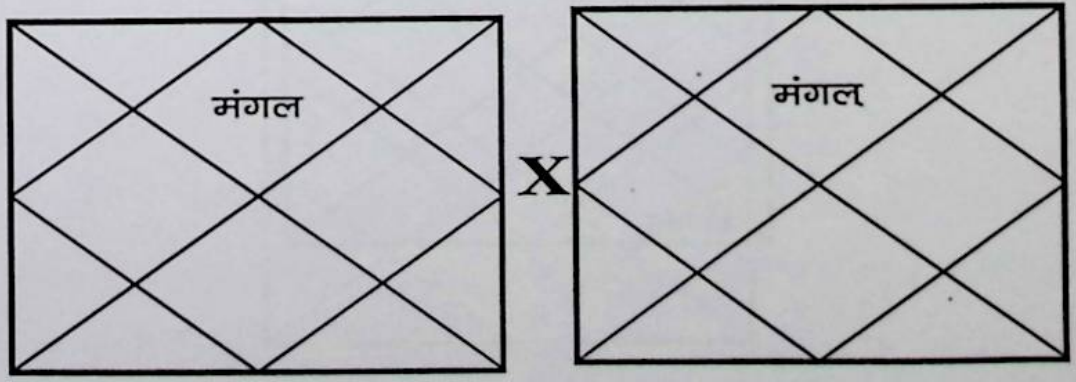

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

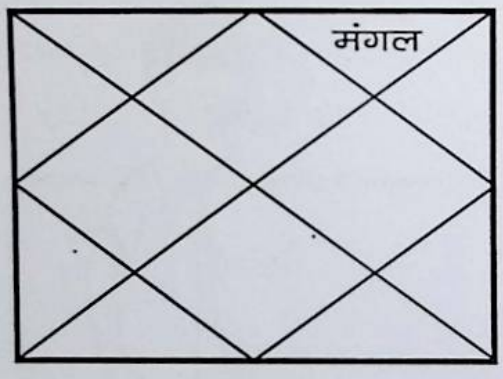

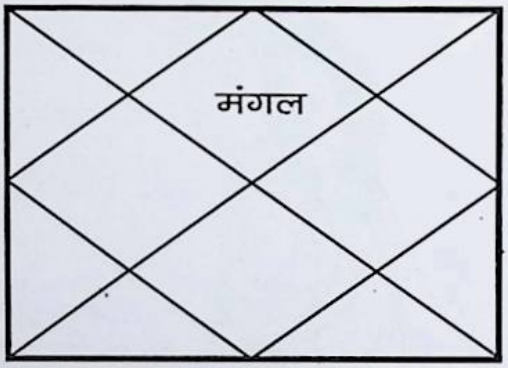

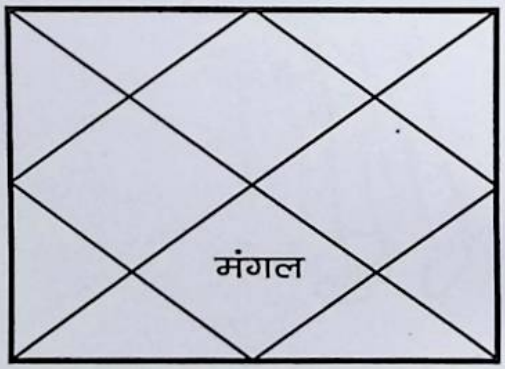

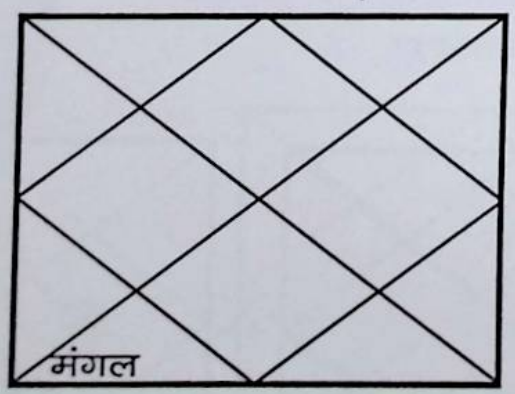

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेष भावस्थ मंगल और शेष भाव

जन्म पत्रिका के प्रथम, चतुर्थ, अष्टम, सप्तम एवं द्वादश भावों मे स्थित मंगल अवशिष्ट भावों को भी अपने दृष्टि प्रभाव में लेता है। उदाहरण जैसे लगनस्थ मंगल की चतुर्थ, सप्तम, अष्टम भावों पर दृष्टि पड़ती है जिससे ये भाव पूर्णतः प्रभावित होते है।

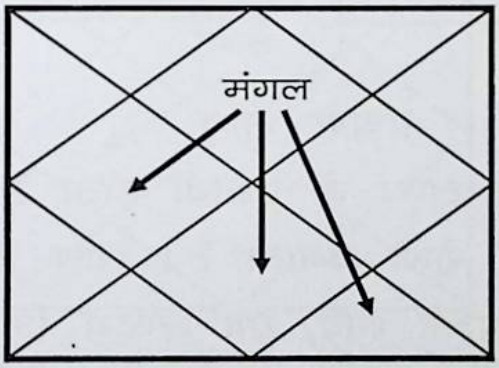

दक्षिण भारतीय पंचागों में इन भागों के अतिरिक्त दूसरा भाव भी शामिल किया है। चंद्र कुण्ड़ली से भी मांगलिक विचार का निर्देश है लेकिन विशेष महत्व केवल लग्न से ही है। जब लड़के–लड़की जन्म लग्न और चन्द्र लग्न दोनों से

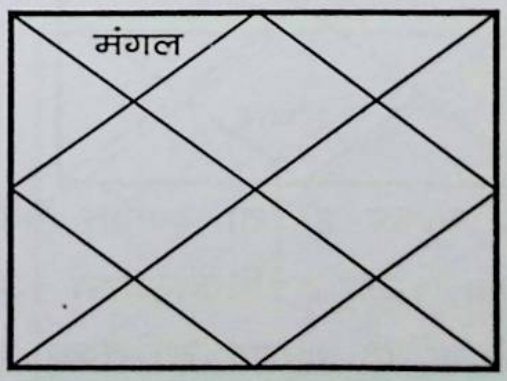

मांगलिक बनते हैं तो उन्हें दुगुना (डबल) मांगलिक कहते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्न पत्रिका

चंद्र कुंड़ली

प्रथम भाव

लग्नस्थ मंगल लग्न में प्रभावी होता है क्योंकि यह क्रूरग्रह जातक को रोगी बनाता है। साथ ही यह चतुर्थ (सुखभाव), सप्तम(पत्नी भाव) एवं अष्टम (आयु भाव) पर भी अपनी पूर्ण दृष्टि से अशुभ प्रभाव ड़ालता है।

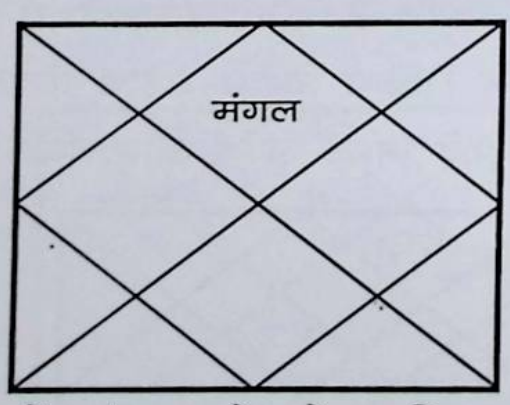

यदि लग्न में मंगल हो तो व्यक्ति क्रोधी, जल्द ही उत्तेजित होने वाला, रुधिर विकारग्रस्त उग्र आक्रामक विचारधारा एवं दुर्घटना के कारण मस्तिष्क पर चोट वाला होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लग्न में स्थित क्रूर मंगल का फल चतुर्थ भाव के फल की हानि अपनी दृष्टि से करेगा। चतुर्थ भाव में पारिवारिक सुख, घर का सुख, चल–अचल सम्पत्ति, माता का सुख इत्यादि में हानि या कमी होगी। घर में क्लेशपूर्ण वातावरण बना रहेगा या व्यक्ति घर से दूर रहेगा।

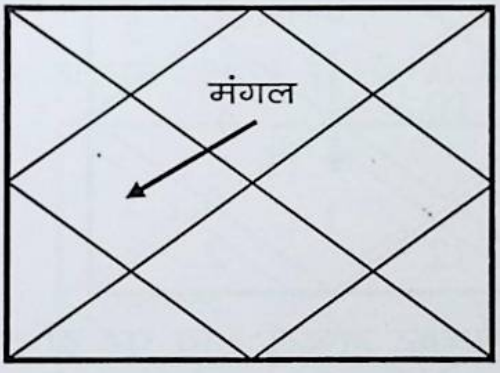

लग्न में स्थित मंगल की सप्तम दृष्टि सप्तम भाव पर होगी जिससे वैवाहिक सुख में बाधा रूकावट एवं परेशानी रहेगी। जातक के स्वभाव का कोपभाजन उसके जीवन साथी को बनना पड़ेगा। जिससे वैवाहिक जीवन सुखी नहीं रह पाएगा।

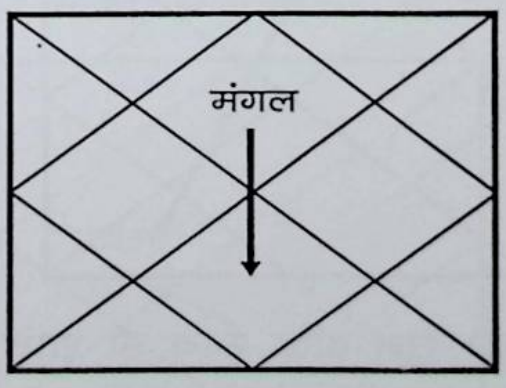

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि मंगल की सप्तम दृष्टि स्वराशि पर हो तो यह वैवाहिक सुख में वद्धि करने वाली होगी अर्थात् मंगल के सप्तम भाव पर अनिष्ठ प्रभाव नहीं होंगे और जातक को वैवाहिक सुख की प्राप्ति होगी।

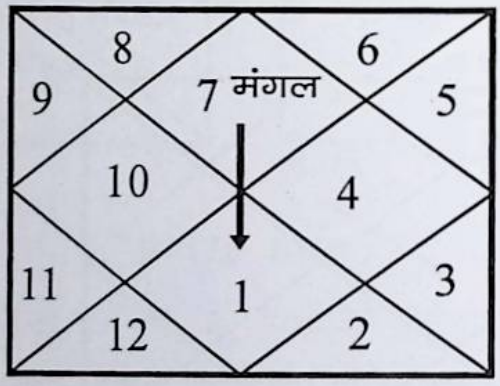

लग्न में मंगल बैठकर अष्टम भाव पर दृष्टि भाव करेगा जिससे वैवाहिक जीवन एवं व्यक्ति की आयु के लिये हानिकारक सिद्ध होगा। जातक का उसकी पत्नि से आपस में साजंजस्य नहीं होने के कारण वैवाहिक सुख में कमी रहेगी ।

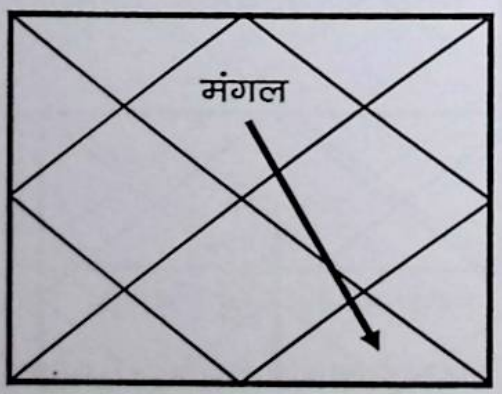

यदि मंगल की शुभ दृष्टि स्वयं ही राशि या मित्र दृष्टि है तो मंगल के दुष्परिणाम नही होंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्थ भाव

चतुर्थ भाव माता, सुख, वाहन व घर को द्योतक है। इस स्थान पर स्थित मंगल सुख और घर को बिगाड़ता है। यहां से आजीविका और आय भाव को पूर्ण दृष्टि से देख इन्हें आक्रान्त करता है।

यदि अशुभ मंगल चतुर्थ भाव में हो तो केवल मकान एवं जमीन के अलावा अन्य सुखों में कमी करेगा।

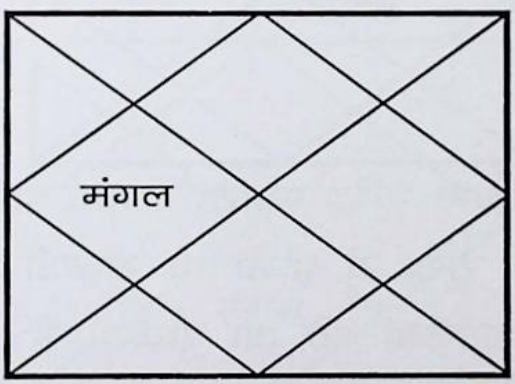

मंगल की चतुर्थ दृष्टि सप्तम भाव पर पड़ेगी अर्थात् घर के सुख में कमी के कारण उसका असर वैवाहिक सुख पर पड़ेगा। पत्नि या पति पर भी मंगल के दुष्परिणामों का फल होगा। जातक की पत्नि के स्वास्थ्य की खराबी रहेगी।

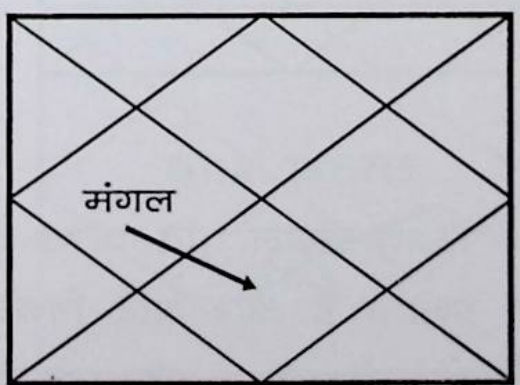

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल की सप्तम दृष्टि दशम भाव पर पड़ेगी यह कार्य पर निर्भर करता है कि जातक का कार्य क्रूर प्रवृत्ति का या सौम्य यदि क्रूर प्रवृत्ति का कार्य है तो मंगल कार्य की हानि नहीं करेगा अन्यथा कार्य क्षेत्र में भी व्यवधान हो सकते है।

मंगल की अष्टम दृष्टि ग्यारहवें भाव पर होगी जिससे बड़े बहन–भाई के सुख में कमी हो सकती है। जातक को आय संबंधित परेशानियां भी आ सकती है।

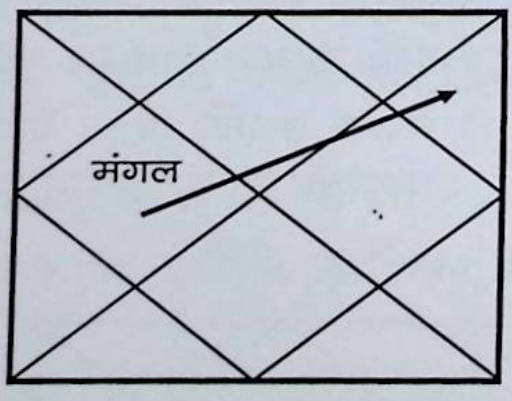

सप्तम भाव

सप्तम भाव में स्थित मंगल पति–पत्नि को वियोग देता है। यह उन्हें रोगी बनाता है और यदि विच्छेदी ग्रह (शनि, राहु, सूर्य) साथ में हों, तो तलाक भी करा देता है। सप्तम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाव में मंगल स्थित होता है तो दांपत्य सुख में कमी करता है। जीवन साथी का स्वभाव क्रोधी तथा साहसिक होता है। स्वास्थ्य में कमी भी रहती है। सप्तम स्थान मारक स्थान भी है। काल पुरूष के अंग में सप्तम, अष्टम भाव में गुप्तांग आते है इसलिये इन भाव में मंगल की स्थिति गुप्तांग संबंधी रोग उत्पन्न करती है। चारित्रिक स्खलन, अनपेक्षताएं, दुर्घटना इत्यादि हो भी सकती है।

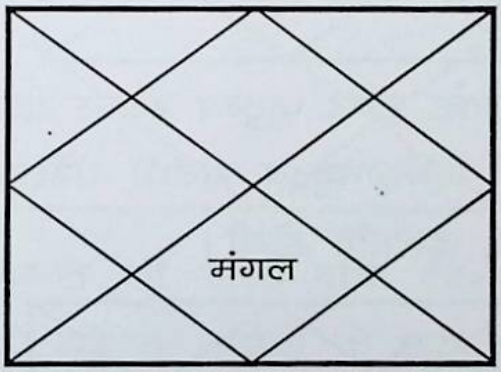

सप्तमस्थ मंगल की चतुर्थ दृष्टि दशम भाव पर होगी जो कि व्यक्ति का कर्म क्षेत्र और सामाजिक क्षेत्र है। इन दोनों क्षेत्रों पर मंगल का कुप्रभाव होगा।

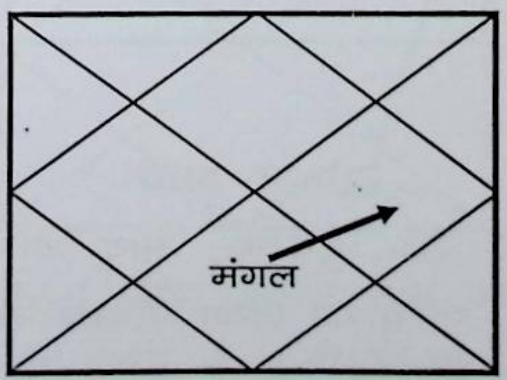

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगल की सप्तम दृष्टि लग्न पर होगी जिससे जातक को उसकी पत्नि के कोप का भाजन स्वयं बनना होगा। दोनों के स्वास्थ्य में भी कमी होगी।

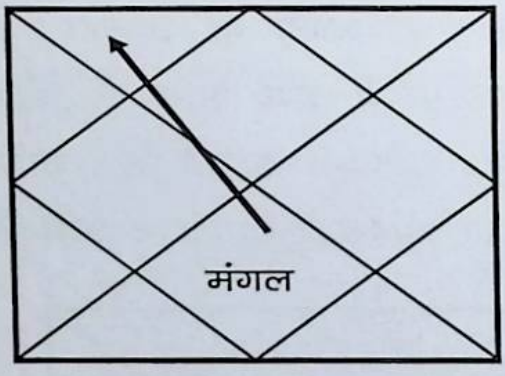

मंगल की अष्टम दृष्टि कुटुम्ब स्थान द्वितीय स्थान पर होगी जिससे धन हानि, कुटुंब संबंधी परेशानी, पति–पत्नि की आयु मे कमी, इत्यादि होगी।

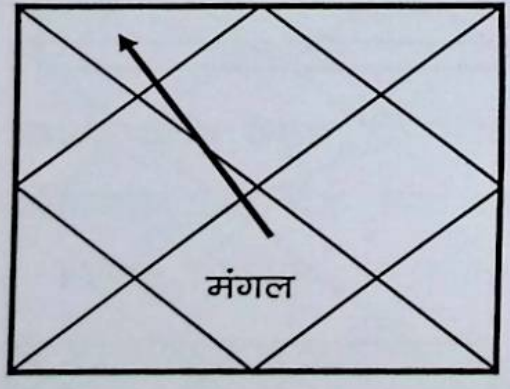

अष्टम भाव

अष्टम भाव रोग, दुर्घटना, आयु आदि के ज्ञान इस भाव से होता है। पत्नि की जन्म पत्रिका में इस स्थान का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सहज भाव पर पूर्ण दृष्टिपात कर दुष्प्रभावित करता है। विघ्न, संकट, बाधा, शोक, मृत्यु, मृत्यु का कारण आदि का बोध अष्टम भाव से होता है। स्त्रियों में अष्टम भाव मांगल्य भाव सौभाग्य होता है। यदि मंगल इस स्थान में होगा तो स्वयं जातक की आयु में कमी करेगा।

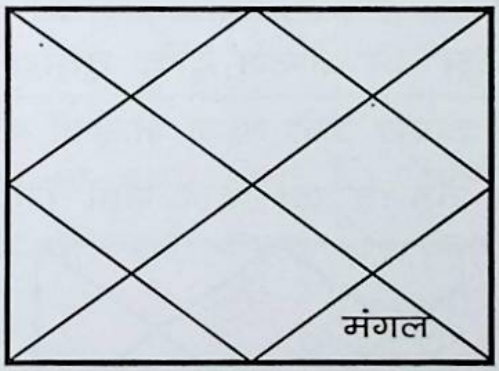

अष्टमस्थ मंगल की चतुर्थ दृष्टि लाभ भाव पर होगी जिससे जातक के बड़े व भाईयों के सुख में कमी करेगा। लाभ में भी कमी आयेगी।

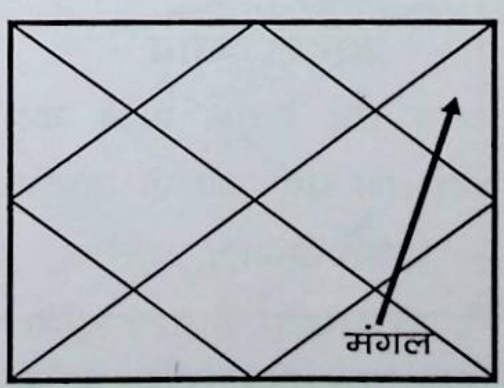

मंगल की सप्तम दृष्टि द्वितीय भाव पर होगी जिससे जातक की पत्नि की आयु में कमी हो सकती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

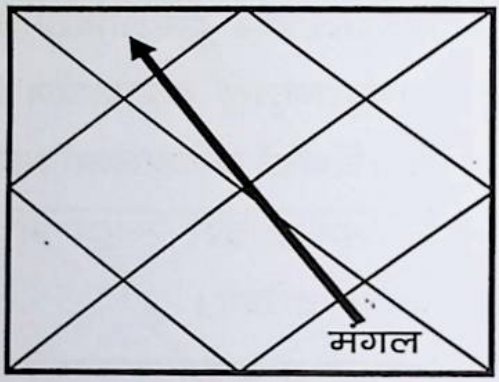

अष्टमस्थ मंगल की अष्टम दृष्टि तृतीय भाव पर होगी जिससे व्यक्ति को अपने छोटे बहन भाईयों के सुख में कमी होगी। व्यक्ति को मेहनत का फल नहीं मिल पाएगा।

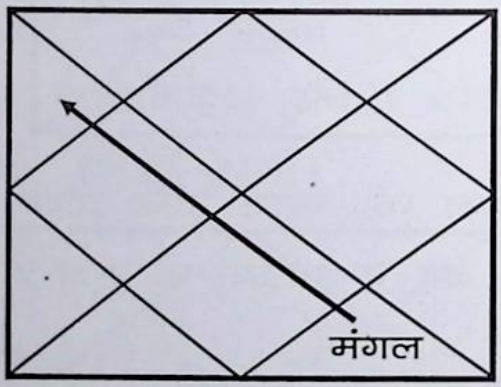

द्वादश भाव

द्वादश भाव व्यय एवं शयन सुख का स्थान है। इस भाव में स्थित मंगल धन एवं स्त्री से जातक को हीन करता है। द्वादश भाव में स्थित मंगल, तृतीय, षष्ठ एवं सप्तम भावों को पूर्ण दृष्टि से देखता है एवं दूषित करता है।

मंगल यदि द्वादश भाव में स्थित होगा तो शैय्या सुख एवं भोग में कमी करेगा। जातक बाध्यता या विवशता का शिकार भी हो सकता है। द्वादश भाव सप्तम से छठा भाव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है इसलिये जीवन साथी के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है।

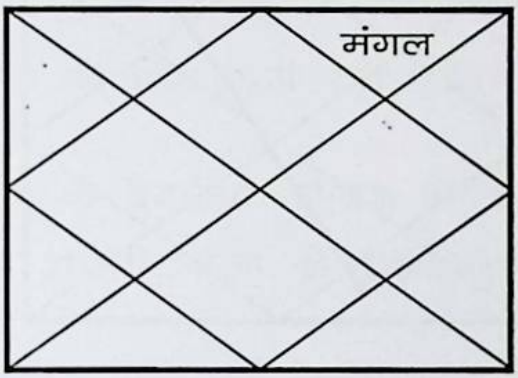

दाम्पत्य सुख में बाधा होती है। जातक दुर्व्यसनं लिप्त रहकर क्रूरता पूर्वक कार्य करता है। जातक जेल भी जा सकता है।

मंगल की चतुर्थ दृष्टि तृतीय भाव पर होगी जिससे कार्य करने में बाधा, बन्धुओं से विरोध उत्पन्न होगा। भाई–बहनों से भी जातक को सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

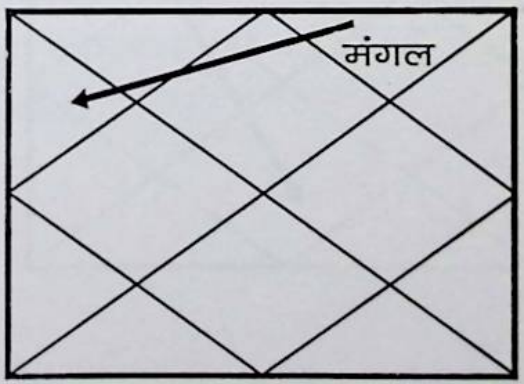

मंगल की सप्तम दृष्टि छठे भाव पर होने से जातक दुर्घटना, रक्त विकृति, विष बाधा, अपघात, गुप्त रोग, नेत्र रोग, अपमानित व उच्च रक्तचाप से पीड़ित हो सकता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

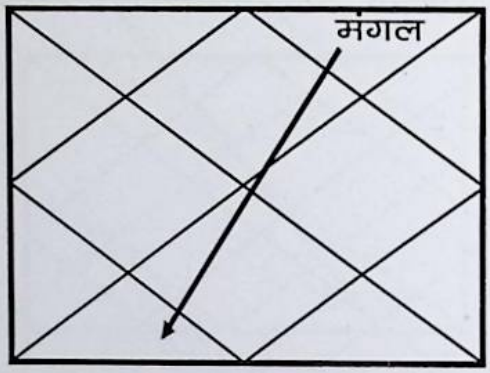

द्वादश भाव में स्थित मंगल की दृष्टि सप्तम भाव पर होती है जो कि जीवन साथी तथा वैवाहिक जीवन का स्थान है। मंगल का कुप्रभाव इनके सुख में कमी करेगा। अनेक परेशानियां उत्पन्न करेगा, जिससे संबंध विच्छेद हो सकता है।

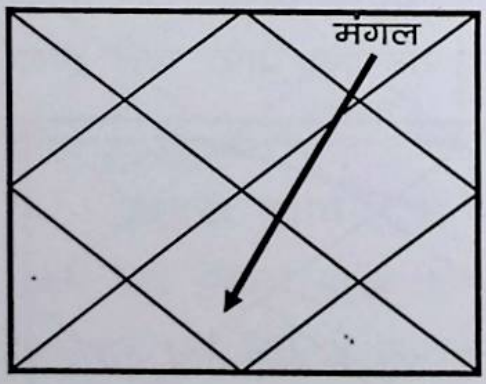

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंगली योग का प्रभाव

1. जातक के विवाह में देरी होना।

2. जातक के वैवाहिक जीवन में अशांति और झगड़े रहे फिर भी वह अपनी पत्नि के साथ–साथ जीवन व्यतीत करें।

3. जातक का उसकी पत्नि के साथ झगड़ों के साथ अत्याचार हो फिर वे अलग हो जाएं।

4. जातक व उसकी पत्नि का शांतिपूर्ण अच्छा वैवाहिक जीवन रहें परन्तु कम समय तक।

5. जातक का उसकी पत्नि का वैवाहिक जीवन चलता रहें किन्तु स्वास्थ्य की कमी के कारण सुख अनुभव न हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि की साढ़े साती

शनि बारह राशियों का भ्रमण प्रायः 30 वर्ष में सम्पन्न कर लेता है। इसके अनुसार एक राशि में लगभग ढ़ाई वर्ष तक शनि का निवास रहता है। साढ़ेसाती का प्रारंभ तब होता है जब शनि गोचर में जन्म राशि से द्वादश भाव में प्रवेश करता है। द्वादश, लग्न एवं द्वितीय भाव तक साढ़ेसाती सहन करने वाला जातक 30 वर्ष पश्चात् ही इसके प्रभाव से पुनः आक्रान्त होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामान्यतः जातक जीवन में प्रायः तीन बार साढ़ेसाती का साक्षात्कार करता है।

12	1	2	3
11 शनि	जन्म राशि मीन साढ़े साती प्रथम ढ़ैय्या		4
10			5
9	8	7	6

12 शनि	1	2	3
11	जन्म राशि मीन साढ़े साती द्वितीय ढ़ैय्या		4
10			5
9	8	7	6

12	1 शनि	2	3
11	जन्म राशि मीन साढ़े साती तृतीय ढ़ैय्या		4
10			5
9	8	7	6

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरण – 1

यदि किसी जातक का जन्म सिंह राशि में हुआ हो तो उसके जीवन में जब भी शनि कर्क, सिंह व कन्या राशि में होगा तब उस समय जातक को शनि साढ़ें साती का प्रभाव रहेगा।

जन्म पत्रिका

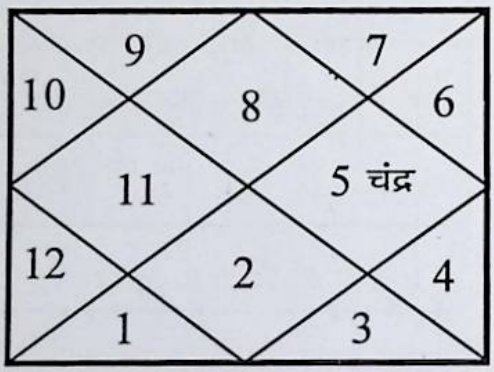

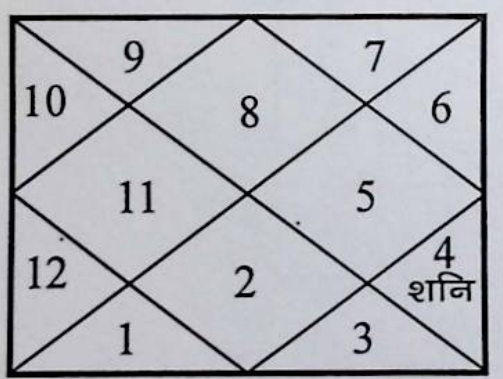

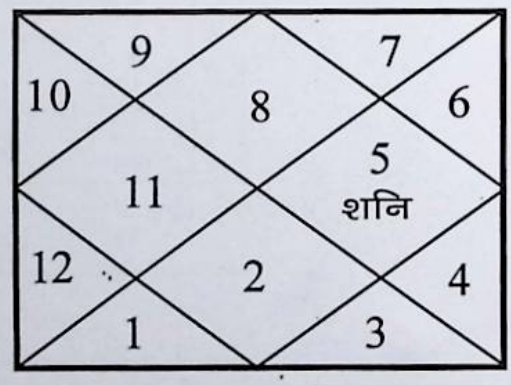

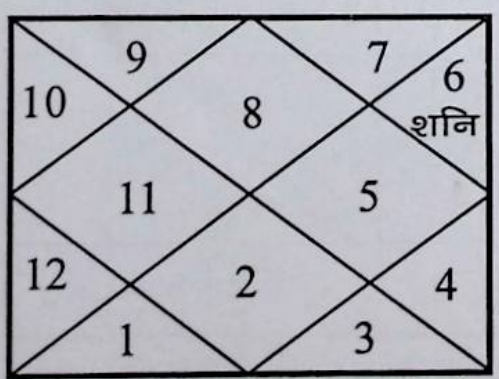

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उदाहरण – 2

यदि किसी जातक का जन्म मीन राशि में हुआ हो तो उसके जीवन में जब भी शनि कुंभ, मीन व मेष राशि में होगा तब उस समय जातक को शनि की साढ़े साती का प्रभाव रहेगा।

जन्म पत्रिका

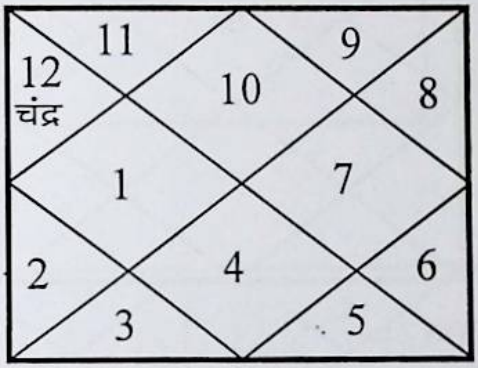

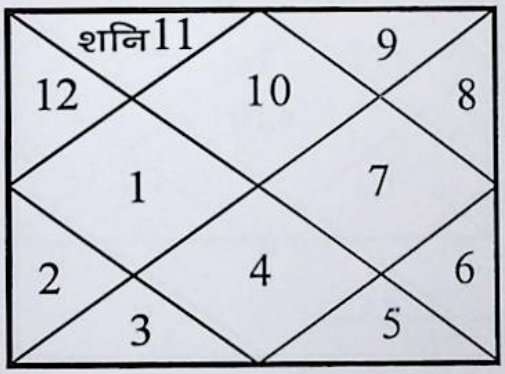

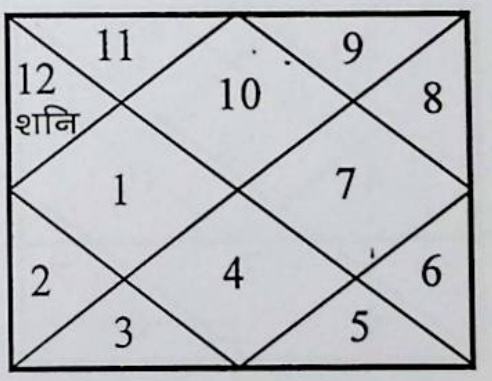

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विभिन्न राशियों पर विभिन्न समयानुसार साढ़े साती का प्रभाव

1. मेष राशि

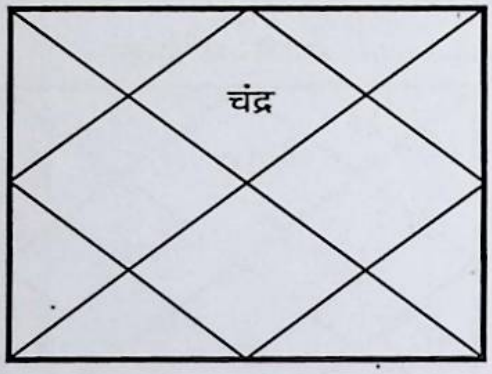

मध्य भाग अशुभ :

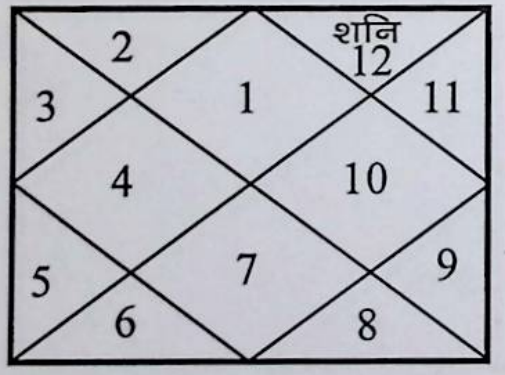

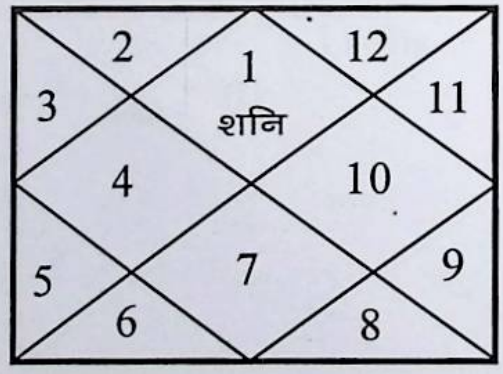

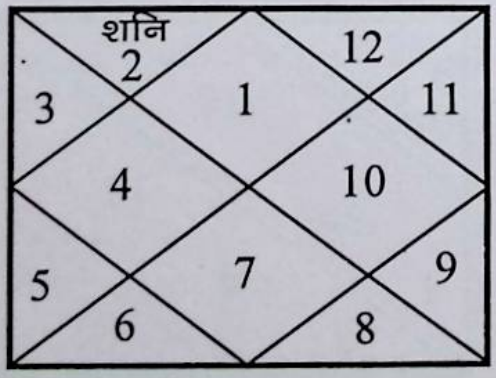

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. वृष राशि

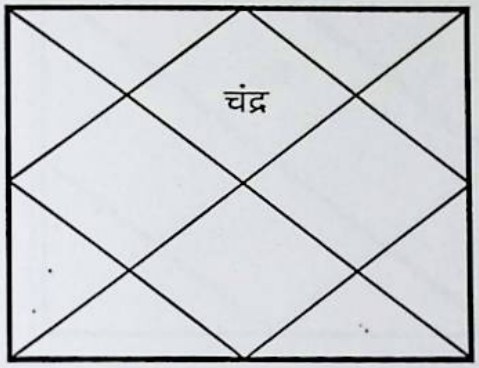

प्रारंभ भाग अशुभ :

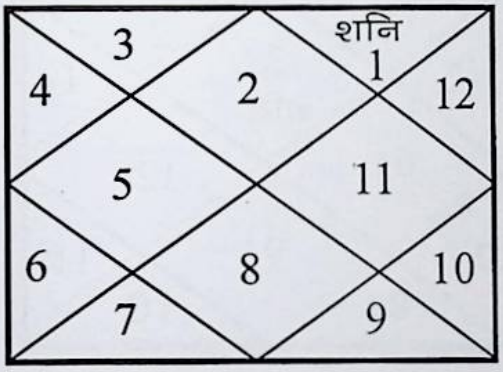

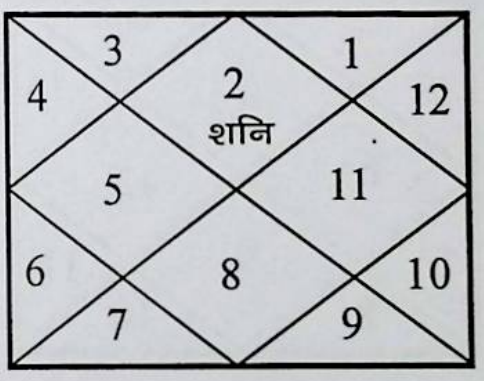

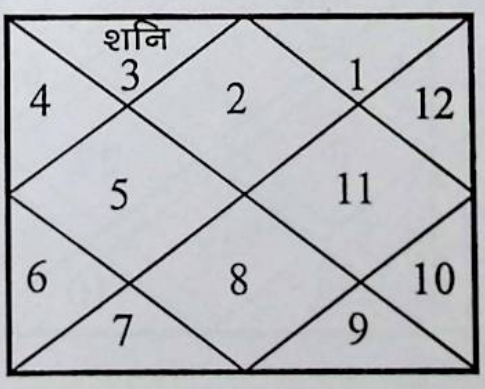

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. मिथुन राशि

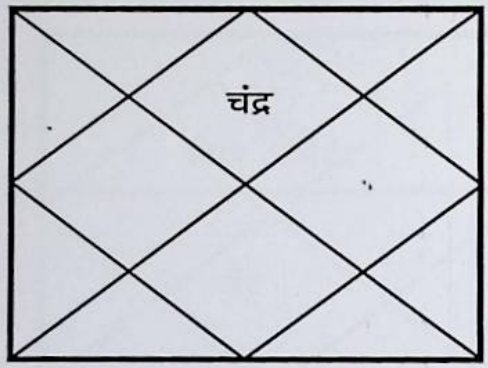

अन्त भाग अशुभ :

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. कर्क राशि

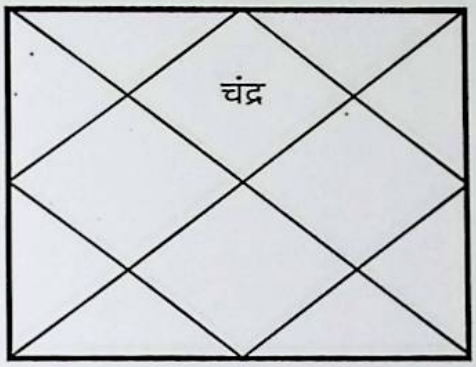

मध्य व अन्त भाग अशुभ :

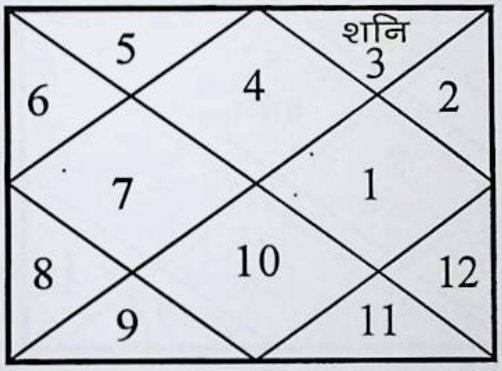

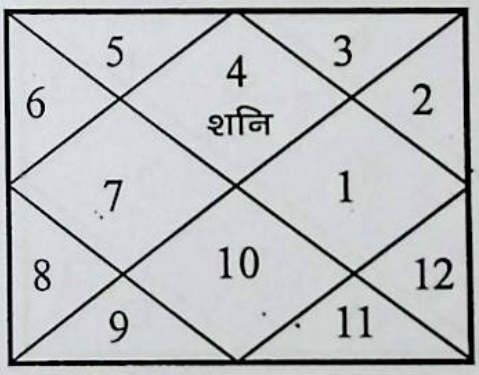

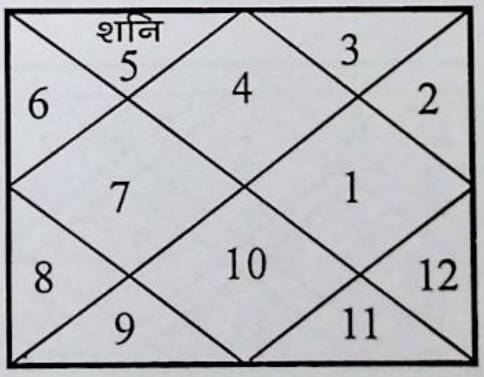

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. सिंह राशि

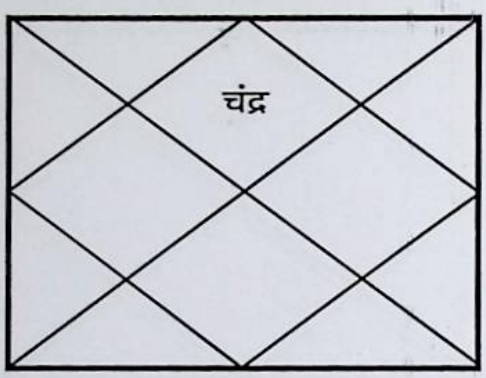

प्रारंभ व मध्य भाग अशुभ :

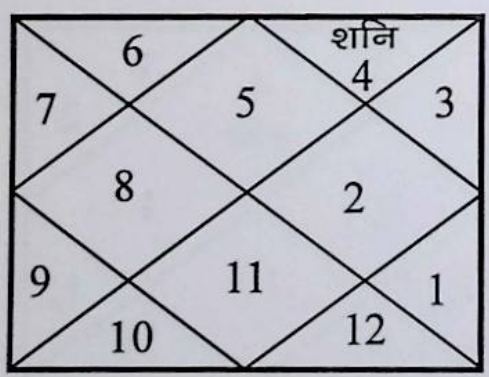

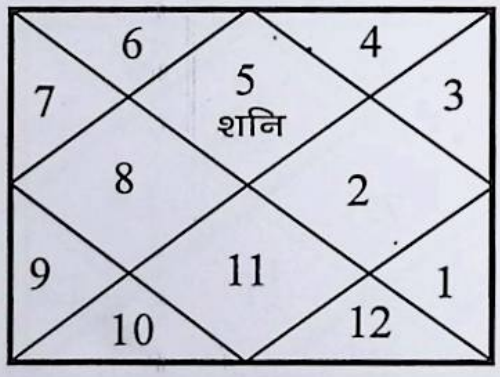

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

6. कन्या राशि

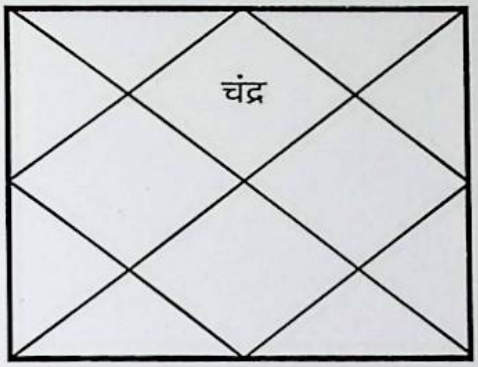

प्रारंभ भाग अशुभ :

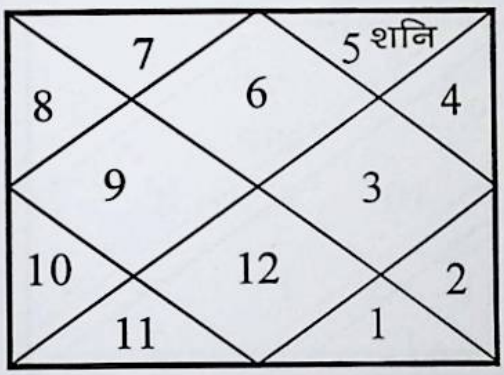

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. तुला राशि

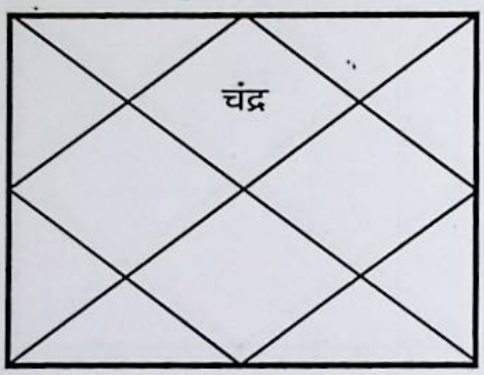

अन्त भाग अशुभ :

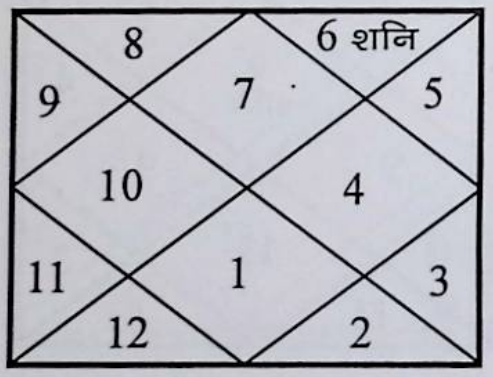

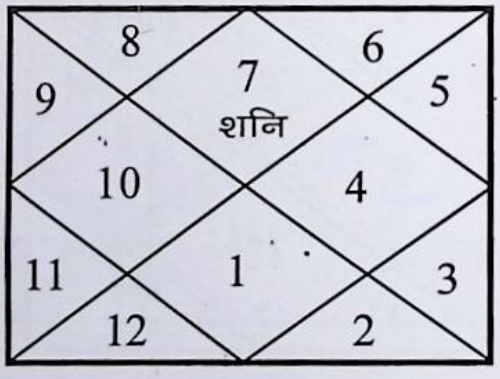

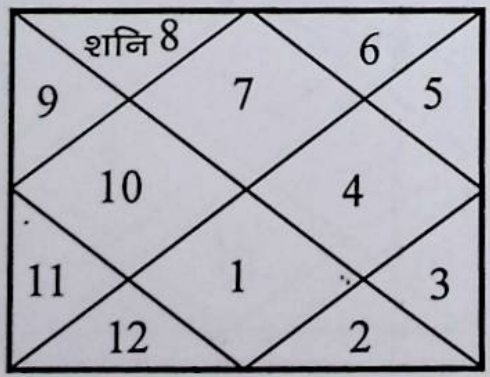

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४. वृश्चिक राशि

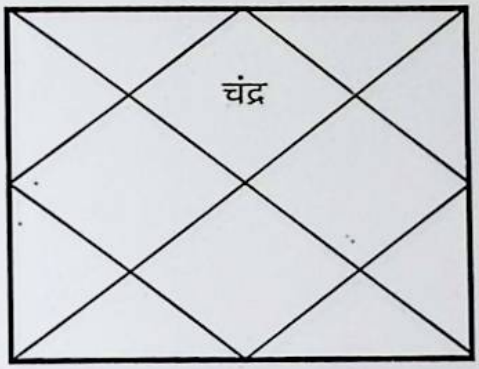

मध्य व अन्त भाग अशुभ :

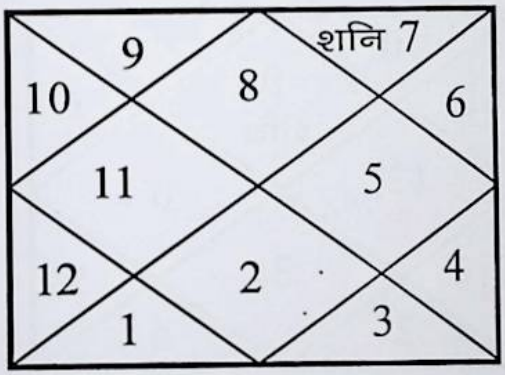

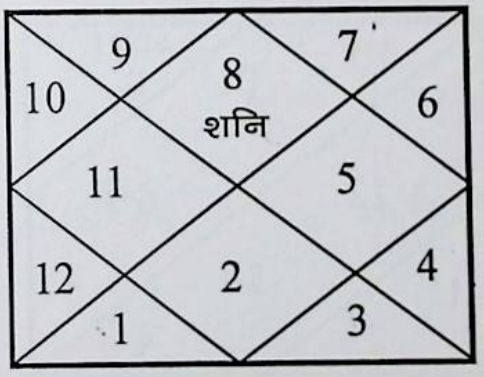

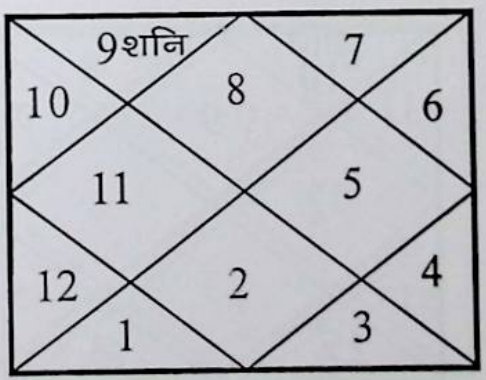

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

9. धनु राशि

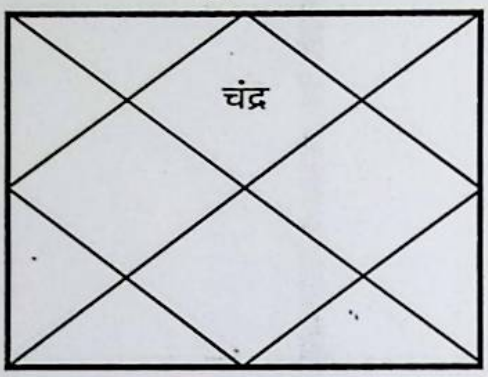

प्रारंभ व अन्त भाग अशुभ :

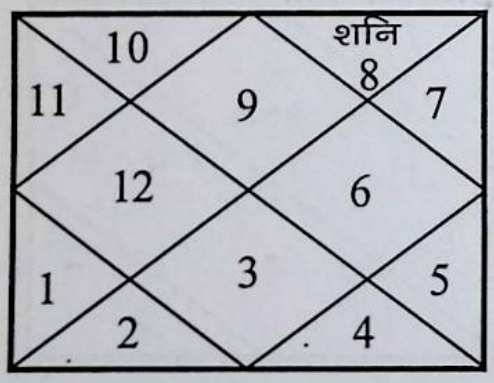

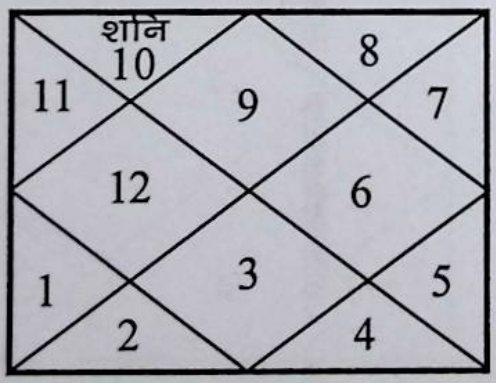

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

10. मकर राशि

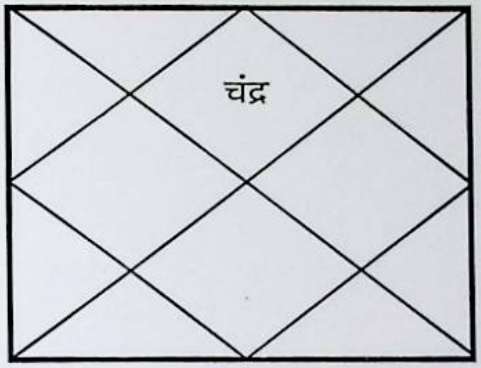

शुभ :

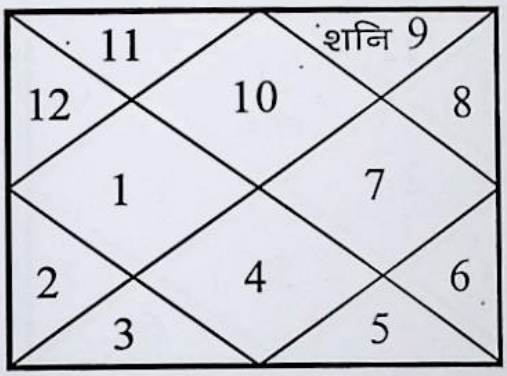

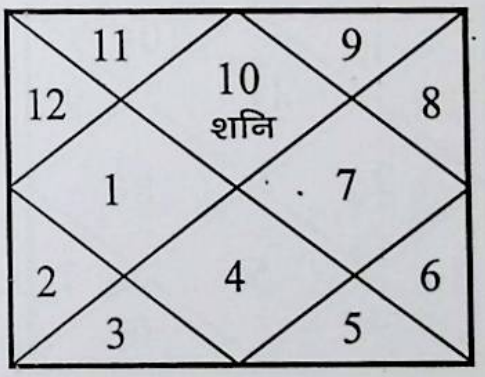

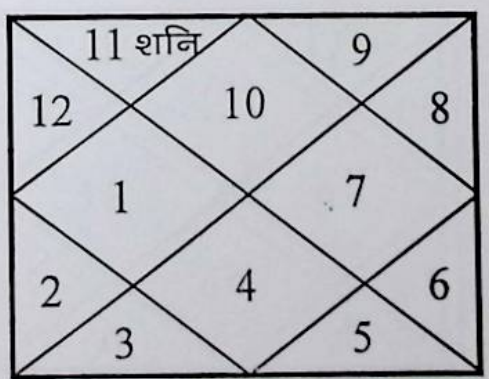

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

11. कुंभ राशि

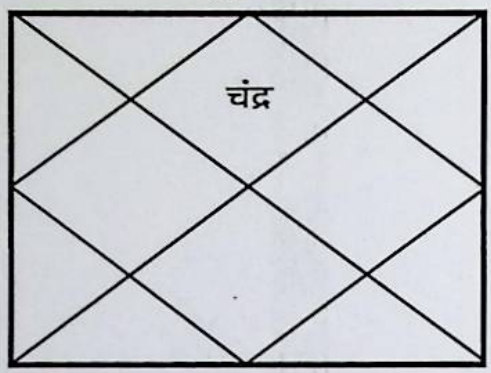

समस्त समय शुभ :

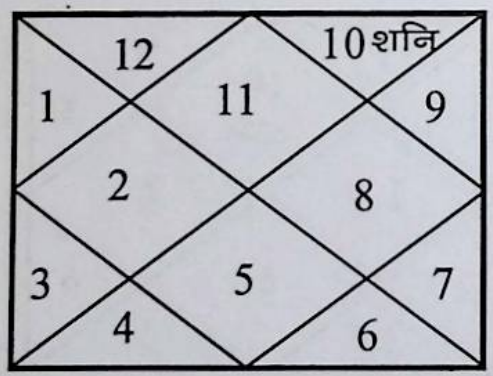

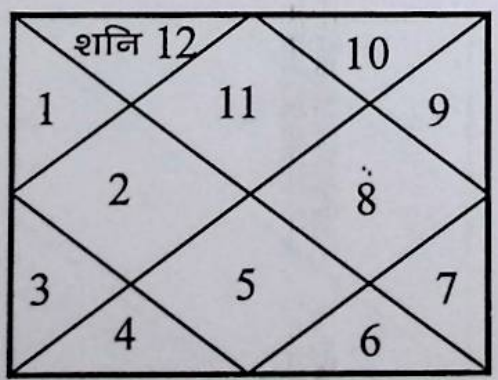

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

12. मीन राशि

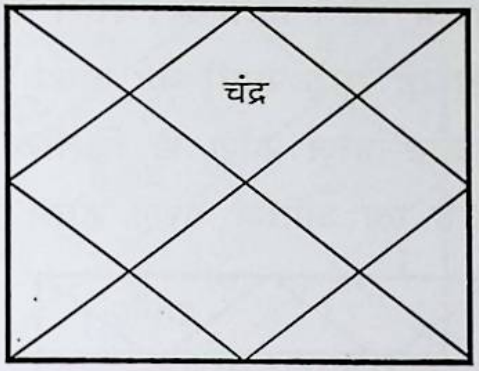

अन्त भाग अशुभ :

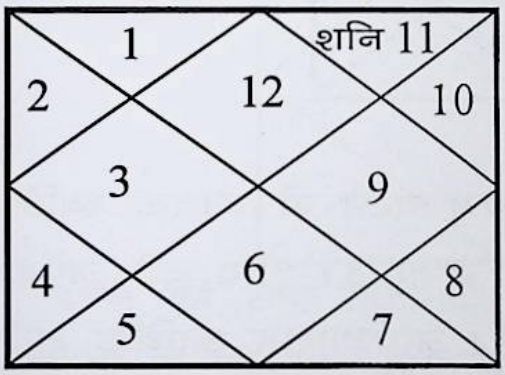

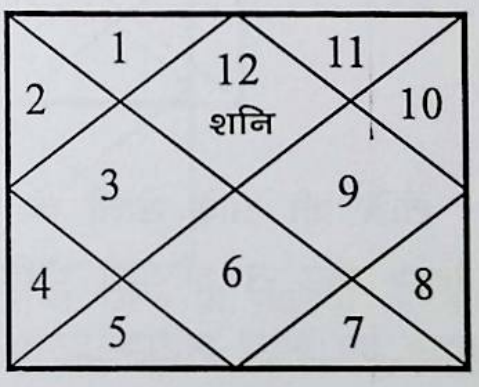

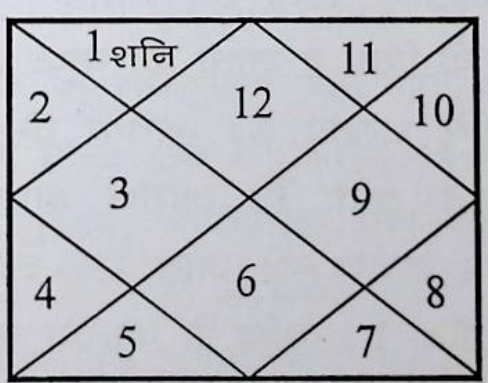

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि जब जन्म राशि से बारहवीं राशि में हो तो यह साढ़े साती का प्रथम चरण होता है। शनि जब स्व में जन्म राशि पर स्थित हो तो साढ़े साती का मध्य या द्वितीय चरण होता है। इसी प्रकार जन्म राशि से द्वितीय राशि में स्थित शनि से साढ़े साती का अंतिम चरण होता है।

शनि की साढ़े साती के प्रथम चरण में जातक व्यक्ति आर्थिक रूप से अत्यन्त पीड़ित रहता है। आय की अपेक्षा जातक का व्यय अधिक रहता है। अप्रत्याशित आर्थिक क्षति जातक को चकित करती है। जातक का शारीरिक सुख अथवा स्वास्थ्य आक्रांत रहता है। जातक निरूद्देश्य भ्रमण करता है। जातक के पिता व माता को कष्ट रहते है। जातक के नेत्रों की व्याधि सम्भव है। जातक के स्नायु तंत्र में भीषण तनाव ग्रस्त रहता है। जातक आत्मीय कष्ट का अनुभव करता है। जातक की आय एवं लाभ नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है। कुटुंब से जातक का वियोग होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वृश्चिक राशि

द्वितीय चरण

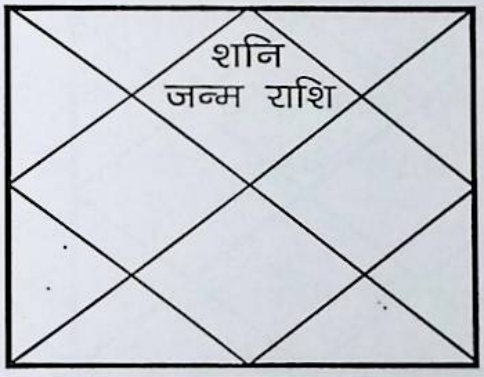

शनि की साढ़े साती के द्वितीय चरण मे जातक आर्थिक चिन्ताओं से परेशान रहता है। जातक का शारीरिक सामर्थ्य, प्रभाव व गति आक्रांत होती है। मानसिक स्तर पर प्रबल उद्वेवगता रहता है। व्यर्थ का व्यय जातक को व्ययित करता है। कोई कार्य जातक के मनोनुकूल नहीं होता अपूर्ण कार्य दुःखी करते है। व्यवधान प्रबल रहते है। जातक का व्यतित्व मन्द होता है। जातक का गृहस्थ, पारिवारिक तथा व्यावसायिक जीवन अस्त–व्यस्त रहता है। दीर्घ यात्रायें, शत्रुओं से कष्ट, व्याधि, सम्पत्ति क्षति, सामाजिक पतन, मित्रों का अभाव एवंकार्यावरोध इस चरण का फल है। जातक के प्रयास निष्फल होते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वृश्चिक राशि

तृतीय चरण

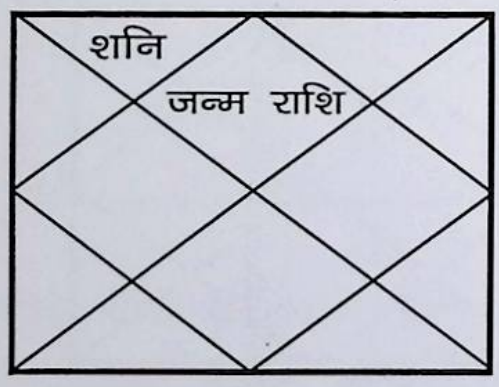

शनि की साढ़े साती के तृतीय चरण में जातक व्यर्थ के विवाद उत्पन्न होते है। आत्मियों के निष्प्रयोजन से संघर्ष होता है। जातक का स्वास्थ्य, सन्तति का सुख एवं उनका आयुर्बल प्रभावित होता है। जातक के सुखों का नाश होता है। एवं उसका पदाधिकार विलुप्त होता है। दैहिक रूप से जातक निर्बलता अथवा जड़ता का अनुभव करता है। जातक का आनंद बाधित होता है। निम्नवृत्ति के लोगों से जातक की कुसंगति होती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वृश्चिक राशि

साढ़े साती की आवृत्तियां :

सामान्यतया एक व्यक्ति अपने जीवन में तीन बार शनि की साढ़े साती का प्रकोप सहन करता है। चतुर्थ आवृत्ति दुस्साध्य अपवाद है।

प्रत्येक आवृत्ति में साढ़े साती की सामर्थ्य भिन्न-भिन्न होती है। प्रथम आवृत्ति अत्यन्त प्रबल होती है। प्रभावित जातक कष्टों-अवरोधों-क्षतियों से आक्रांत होता है।

द्वितीय आवृत्ति अपेक्षाकृत संयमी होती है। साढ़े साती का मारक प्रभाव न्यून रहता है। व्यक्ति किंचित सुविधा अनुभव करता है।

तृतीय आवृत्ति भीषणतम परिणामों से परिपूर्ण रहती है। व्यक्ति बहुमुखी आपत्तियों से आक्रांत रहता है। शनि अपने क्रूर प्रभाव से जीवन का सर्वनाश करने में प्रवृत्त हो जाता है। इस आक्रमण से अति सौभाग्यशाली जातक ही सुरक्षित रह सकते है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पितृ दोष

भारतीय ज्योतिष के अनुसार सूर्य इस सौर मंड़ल का राजा है और इससे पिता की स्थिति का अवलोकन किया जाता है। शनि सूर्य का पुत्र है, परन्तु सूर्य का परम शत्रु है। शनि वायु विकार का कारक ग्रह है। राहु का फल भी शनि के समान ही है। सूर्य आत्मा का कारक है इसलिए जब सूर्य जन्म पत्रिका में अशुभ हो तो यह दोष कारक होता है।

सूर्य जब शनि के प्रभाव में (साथ बैठकर या दृष्टि में रहकर) होता है, तो ऐसा जातक निश्चय ही पितृ दोष से पीड़ित होता है। जब शनि के साथ राहु भी सूर्य को पीड़ित करता है, तो जातक के पिता अन्य चांड़ाल प्रकृत्ति की आत्माओं से भी पीड़ित हैं और यह दोष अधिक है।

पितृ दोष के लक्षण

जन्म पत्रिका में दोष का पता ग्रहों की स्थिति से लगाया जा सकता है। जन्म पत्रिका में सूर्य पिता का, चंद्रमा माता का एव गुरू, गुरू या शिक्षक के कारक है। इसलिए यदि सूर्य जन्म पत्रिका में पीड़ित है तो जातक को पिता या पिता के पिता अर्थात किसी पुरूष से संबंधित दोष है। इसी प्रकार यदि चंद्रमा दूषित हो या पीड़ित हो तो यह मातृ संबंधी या माता कें परिवार से आये पितृ दोष का कारक है। इसी प्रकार यदि जन्म पत्रिका में गुरू ग्रह पीड़ित है तो यह ऋषि या गुरू (शिक्षक) संबंधी दोष बताता है। पितृ दोष के प्रभाव पिढ़ी दर पिढ़ी चलता रहता है। यदि दादा ने अपने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीवन में कोई अनैतिक कार्य किया हो या किसी पूर्वज को दुःख पहुंचाया हो या किसी भी प्रकार से पूर्वज की आत्मा को शांति न मिले तो इस तरह से उत्पन्न दोष पुत्र की जन्म पत्रिका में अवश्य होंगे। चूकि यह अनैतिक कर्म तो किसी और ने किया है तो संतान कष्ट भोगती है। इसका प्रमुख कारक है कि संतान जब पिता की संपत्ति एवं वैभव को उत्तराधिकार में प्राप्त करती है उसी प्रकार यह दोष भी उत्तरोत्तर चलते व बड़ते जाते है। इसमें संतान के पिछले जन्म के प्रारब्ध भी है जो उसकी जन्म पत्रिका दोषों से पीड़ित है।

पितृ दोष के प्रभाव

1. परिवार में प्रायः अनावश्यक तनाव रहता है।
2. बने–बनाये काम आखिरी कार्य समय पर बिगड़ जातेहै।
3. अपेक्षित परिणाम अनावश्यक विलंब से मिलते है।
4. मांगलिक कार्य (विवाह योग्य संतानों के विवाह आदि) मे, सभी परिस्थितियां अनुकूल होने पर भी विलंभ होता है।
5. भरपूर आमदनी के होते हुए भी बचत पक्ष कमजोर होता है।
6. पिता–पुत्र में अनावश्यक वैचारिक मतभेद होते है।
7. शरीर में अनावश्यक दर्द और भारीपन रहता है।
8. जातक व उसके परिवार का स्वयं के घर में मन नही लगता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पितृ दोष का निर्माण

1. यदि जन्म पत्रिका में सूर्य नीच या शत्रु राशि को हो व राहु या शनि द्वारा दृष्ट हो।

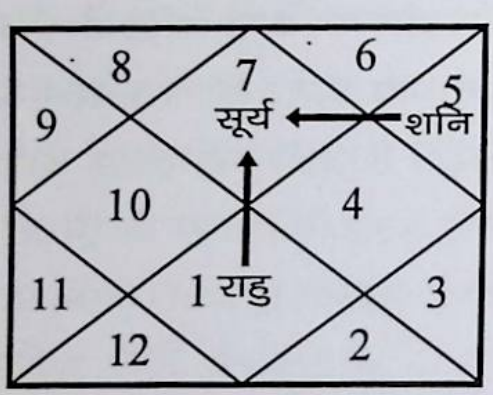

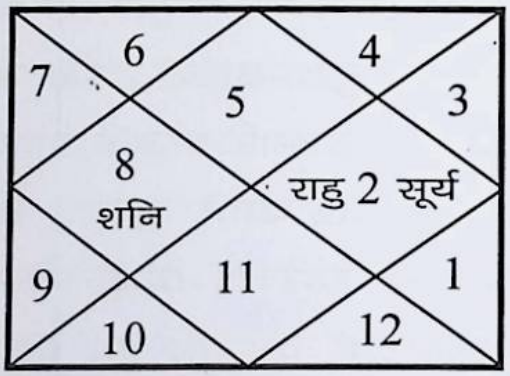

2. यदि पंचम व एकादश भावों में चंद्रमा या शनि नीच राशि के हो तथा उन्हें राहु या शनि प्रताड़ित करें अर्थात राहु या शनि की युति हो या दृष्टि हो। चंद्रमा की केतु के साथ युति भी अशुभ हैं।

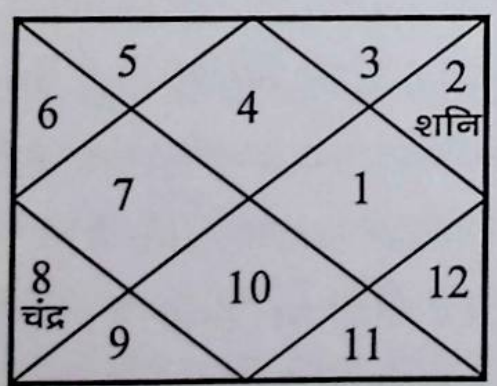

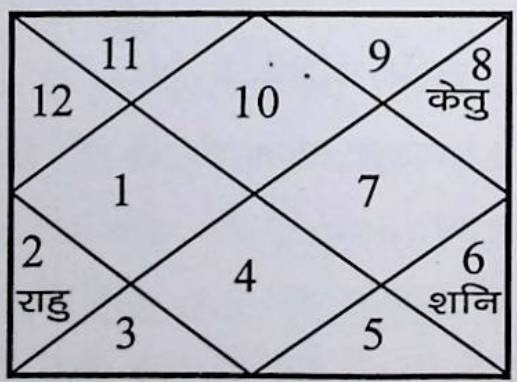

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

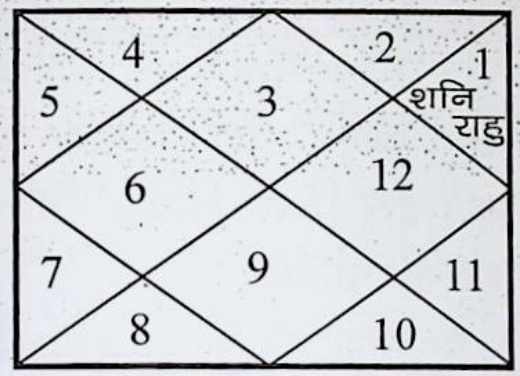

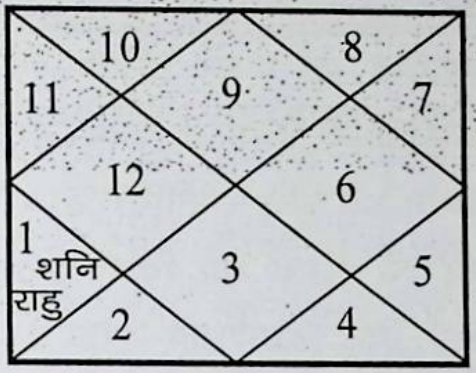

3. यदि चंद्रमा नीच राशिगत हो एवं ानि या राहु द्वारा प्रताड़ित हो।

पितृ दोष निवर्ती के उपाय

जन्म पत्रिका में किसी भी परेशानी को हल करने के पहले उसका कारण जानना चाहिये। यदि सूर्य ग्रह जन्म पत्रिका में पितृ दोष निर्मित करता है तो यह पिता से संबंधित है। सबसे पहले जातक को अपने पिता से मन-मुटाव दूर करने होंगे। पिता के कारण ही वह उत्पन्न हुआ है एवं पिता ने जन्म से उस का पालन-पोषण किया है। स्कूल में प्रवेश से कॉलेज तक व विवाह तक जातक के पिता ने जातक के प्रति अपने कर्त्तव्य का निर्वाह किया है। यदि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जातक की जन्म पत्रिका पितृ दोष से ग्रसित है तो जातक का उसके पिता के साथ मधुर संबंध बनाने होंगे। जातक को पिता के प्रति समर्पित रहना होगा। इस प्रकार चंद्रमा पीड़ित हो तो माता का विशेष ध्यान रखना चाहिये।

पितृ दोषों को स्थूल रूप से छः योगों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

1. गौत्र दोष
2. कुलदेवी दोष
3. ड़ाकिनी–शाकिनी दोष
4. प्रेत दोष
5. क्षेत्रपाल दोष
6. बैताल दोष

परिवार में कभी किसी सदस्य की करूण, आकस्मिक, अकाल मृत्यु हो जाने पर मृतक की इच्छाएं अपूर्ण रह जाती है। इच्छाओं की अभिव्यक्ति का उसे अवसर नहीं मिलता। इन अव्यक्त इच्छाओं का परिवार जनों का ज्ञान भी नहीं होता। अकाल मृत्यु से उपजा दोष वर्गीकरण में प्रथम श्रेणी को दोष है और इसे पितृ दोष कहते है।

गौत्र दोष :

गौत्र दोष में एक ही गौत्र के व्यक्तियों की संख्या धीरे–धीरे कम होने लगती है। पुत्र–पुत्री अर्थात संतान का अभाव होने लगता है। वंश वृद्धि तथा संतानोत्पत्ति के सभी उपाय व्यर्थ सिद्ध होने लगते है। एक जाति विशेष इस दोष से पीड़ित है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुलदेवता व कुलदेवी दोष

आधुनिकता की चकाचौंध में धार्मिक मान्यताओं एवं आस्थाओं को अंधविश्वास करार देकर कुछ परिवारों में परम्परागत रूप से चली आ रही देवी–देवताओं की पूजा बंद कर दी जाती है या उसमें कुछ कमी आ जाती है। कभी–कभी घर के बुजुर्ग भी इन परम्पराओं से पूर्णतया परिचित नहीं होते तथा पूजा अर्चना स्वयमेव बंद हो जाती है। इस अज्ञानता से उत्पन्न हुए दोषों को कुल देवी दोष कहा जाता है।

ड़ाकिनी–शाकिनी दोष

घर के पुरूष चारित्रिक रूप से भ्रष्ट होकर अन्य स्त्रियों के सम्पर्क में आकर अपनी पत्नि के साथ या घर की अन्य महिलाओं के साथ अन्याय करने लगे या शारीरिक प्रताड़ना देने लगें या उन्हें अकाल मृत्यु की ओर धकेल दें तो स्त्री जाति के अपमान स्वरूप परिवार में पितृ दोष उत्पन्न हो जाता है। इस प्रकार के दोष को ड़ाकिनी–शाकिनी दोष कहा जाता है। यह दोष अत्यधिक तीव्र व भयंकर रूप ले सकता है। यदि किसी महिला की मृत्यु परिवार के किसी सदस्य के प्रताड़ित करने पर हो जायें।

प्रेत दोष

प्रेत दोष में जातक असामाजिक तत्वों के सम्पर्क में आकर उनसे व्यथित रहता है। रात–दिन भय के वातावरण में जीवित रहता है। इसी व्यवस्था में जीवित रहता है। इसी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यवस्था तथा वातावरण में जातक का अंत हो जाता है।

क्षेत्रपाल दोष

जब रक्षक ही भक्षक बन जाये एवं जातक विश्वासघात में लिप्त हो जाये तो क्षेत्रपाल नाम का पितृ दोष होता है।

बैताल दोष

यदि कोई जातक किसी की हत्या कर दें तो वह बैताल दोष से पीड़ित होता है।

पितृ दोष के कारण

1. घर–पविार में जातक के सगे संबंधी की अकाल मृत्यु होना।

2. जातक के परिवार पूर्व में मृत व्यक्ति को आत्मा की शांति के लिए विधि विधान से पूजा अर्चना न किया जाना।

3. जातक का किसी अन्य या अपने ही सगे संबंधी के यहां गोद जाना।

4. जातक के पूर्वजों के यहा किसी का पैसा अनैतिक तरिके से आया हो तो भी जन्म पत्रिका में पितृ दोष आता है।

5. जातक के पिता या माता की जन्म पत्रिका मे पितृ दोष या काल–सर्प दोष हो तो भी जातक की पितृ दोष होता है।

6. जातक के पिता या दादा की एक से अधिक पत्नि हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पितृ दोष के लक्षण

1. पितृ दोष वंशनाश का द्योतक है। जातक के परिवार में कन्यायें पुत्रों की अपेक्षा ज्यादा होना या जातक के पुत्रों का न होना यहां पुत्र को कन्या से श्रेष्ठ नहीं माना गया है किन्तु पुत्र ही पिता की अंतिम क्रिया व संस्कार करना है इस कारण पुत्र न होने से दोष प्रतित होता है।

2. पितृ दोष में जातक अपने घर व परिवार से (पिता के घर से व जन्म स्थान से) जितना दुर जायेगा उतना वह सुखी होता जायेगा। विदेश जाने पर पितृ दोष न्यून हो जाता है।

3. पितृ दोष में जातक के मामा नहीं होते। यदि होते है तो उनकी स्थिति बहुत नाजुक व खराब होती है।

4. पितृ दोष का विशेष प्रभाव सबसे बड़े या सबसे छोटे या उस संतान पर अधिक रहता है जो लाड़ला हो।

5. पितृ दोष मे जातक हमेशा भाग्यहिन व पीड़ित रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमि दोष

भूमि का कारक ग्रह मंगल है इसलिए भूमि दोष का कारक ग्रह भी मंगल होगा। यदि जन्म पत्रिका में मंगल पीड़ित हो तो वह भूमि दोष निर्मित करता है।

भूमि दोष की उत्पत्ति

अनैतिक व गलत कार्यो का फल तो इंसान को भागना ही पड़ता है। यदि जातक के परिवार में किसी की जमीन या जायदाद या घर अनैतिक तरीके से या हड़प कर छीना गया हो तो उस जातक के पूत्रों व पोत्रों की जन्म पत्रिका में भूमि दोष मिलेगा। प्रकृति में जो जैसा करता है उसे व उसकी संताने को वैसा फल प्राप्त होता है। इतिहास में बहुत से जमींदार व ब्याज कमाने वाले व्यापारी हुए है जिन्होंने अनैतिक तरीके से दूसरों की संपत्ति को छीना है। आज उनकी संताने घोर कष्ट भोग रही है। यही कारण है कि किसी भी जातक की जन्म पत्रिका में दोष पाया जाना मात्र एक संयोग नहीं है किन्तु यह उसके पूर्व जन्म के प्रारब्ध है जो उसका जन्म ऐसे घर में हुआ जहां दोष है एवं वह स्वयं का भागीदार बना।

भूमि दोष का जन्म पत्रिका में प्रार्दुभाव

जन्म पत्रिका में मंगल की स्थिति से भूमि दोष का पता लगाया जा सकता है। यदि जन्म पत्रिका में एकादश भाव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में मंगल शत्रु राशि या नीच राशिगत हो तो वह भूमि दोष का प्रबल कारक है।

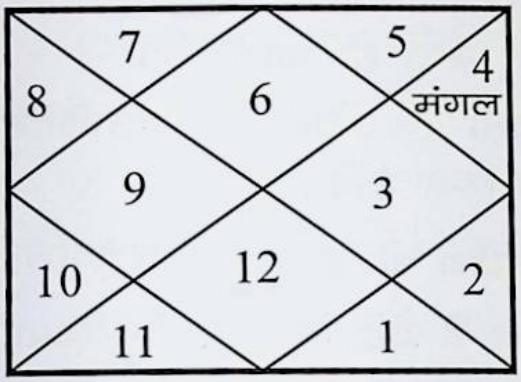

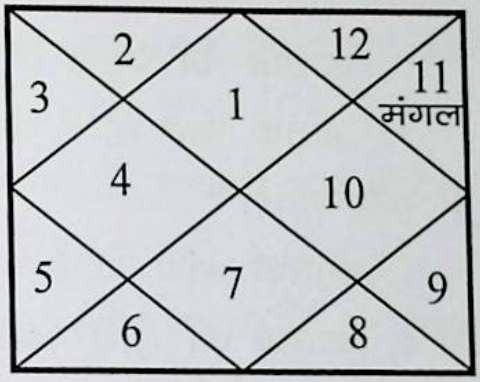

यदि मंगल एकादश भाव में शत्रु या नीच राशिगत हो एवं चतुर्थ स्थान का स्वामी भी पाप ग्रहों द्वारा दृष्ट हो या नीच या शत्रु राशि में हो या अस्त हो तो भूमि दोष प्रबल होता है।

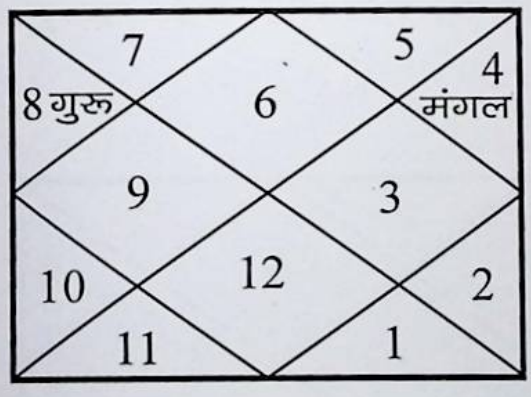

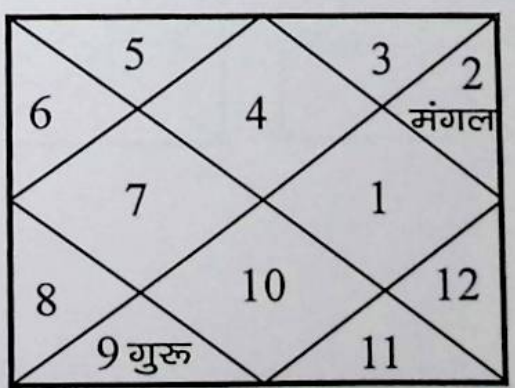

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमि दोष के प्रभाव

1. जातक की पैतृक संपत्ति नष्ट हो जाती है।

2. जातक जो भूमि खरीदता है उसका वह उपभोग नहीं कर पाता।

3. जातक भूमि के क्रय–विक्रय में हानी होती है।

4. जातक जो भूमि खरीदता है वह विवादित हो जाती है।

5. जातक के पास अथाह संपत्ति होने के बाद भी उसे किराये के मकान में रहना पड़ता है। वह स्वयं का मकान निर्मित नहीं कर पाता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दैविक दोष

कारण

1. परिवार का कोई सदस्य संत बन गया हो और उसकी घर में देवता समान पूजा होती हों।

2. देवता से कोई मन्नत मांगी हो व कार्य पूरा होने के उपरांत भी उसे पूरा न किया हो।

3. देवता व पितृों का पूजा स्थान एक हो व उनकी समान तरीके से पूजा होती हो।

निवारण

प्रायः गुरू जब जन्म पत्रिका में अकेला पंचम भाव में शत्रु या नीच राशिगत हो तो दैविक दोष का निर्माण होता है।

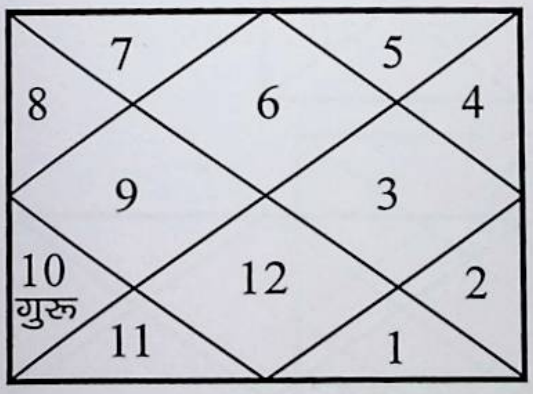

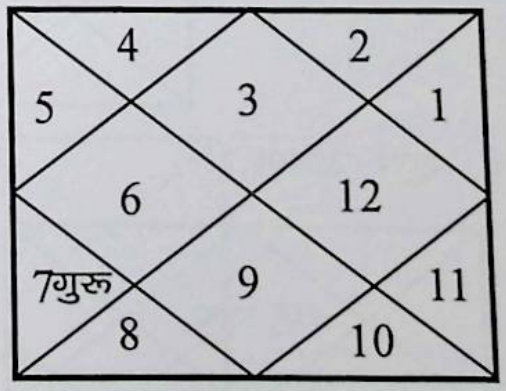

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहण दोष

ग्रहण

राहु जब सूर्य के साथ हो एवं केतु यदि चंद्रमा के साथ युति करें तो ग्रहण दोष का निर्माण होता है। ग्रहण दोष तब विशेष़ कष्टदायी होता हैं जब उस दिन ग्रहण दिखाई दें। यदि ग्रहण न हो तो इसका प्रभाव कुछ कम होगा। ग्रहण योग जन्म पत्रिका मे जिस भाव मे बनता है उस भाव का नाश होता है। सूर्य ग्रहण विशेषकर जातक के पिता के लिए कष्टकारी रहता है।

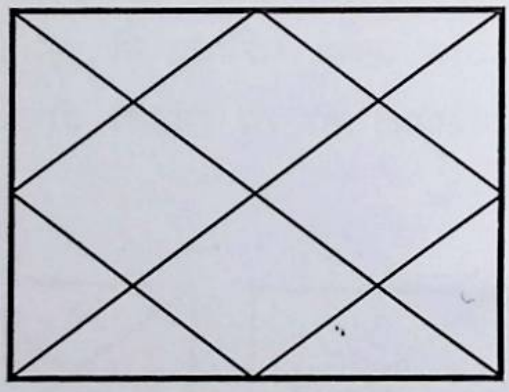

1. सूर्य ग्रहण

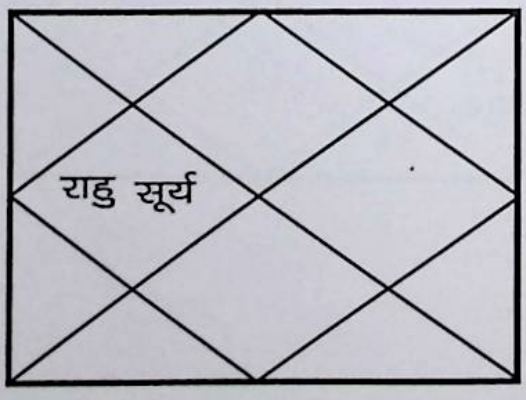

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. चंद्र ग्रहण

चंद्र ग्रहण विशेषकर माता के लिए अशुभ है। जातक के मन पर भी चंद्र ग्रहण का दुष्प्रभाव पड़ता है।

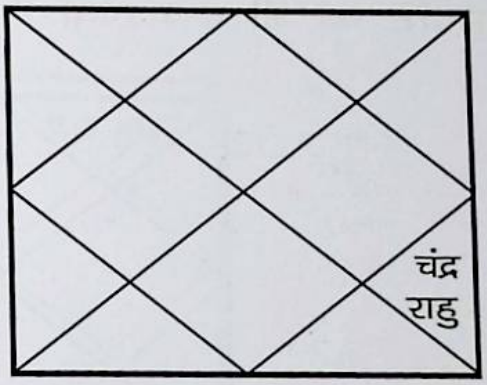

1. सूर्य ग्रहण

प्रथम भाव

प्रथम भाव मे बनने वाले सूर्य ग्रहण से जातक का सांवला रंग व कुरूप काया होती है। जातक मानसिक रूप से नकारात्मक सोच करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वितीय भाव

द्वितीय भाव में बनने वाले सूर्य ग्रहण से जातक को कुटुंब का सुख प्राप्त नहीं हो पाता। जातक की पैतृक सम्पत्ति का भी क्षय होता है।

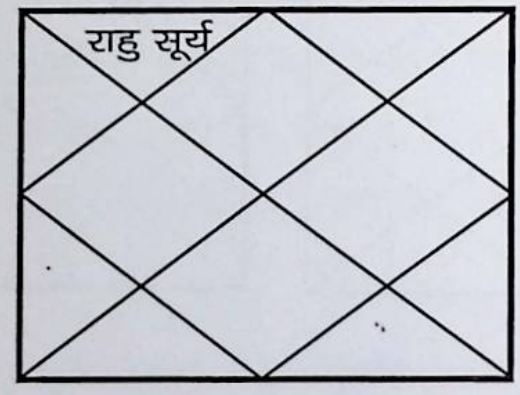

तृतीय भाव

तृतीय भाव मे बनने वाले सूर्य ग्रहण से जातक का पराक्रम दुष्कर्म में होता है। जातक प्रायः राजनीति में विशेष रूचि रखता है।

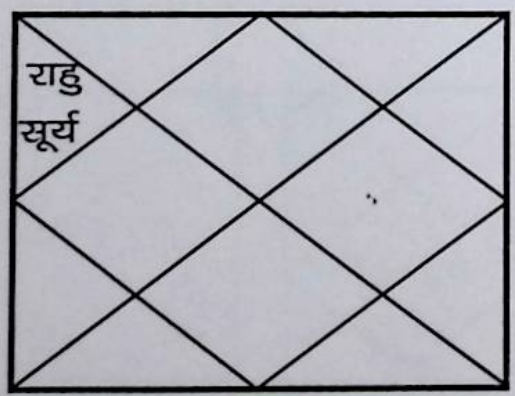

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्थ भाव

चतुर्थ भाव में बनने वाले सूर्य ग्रहण से जातक के सुख का नाश होता है। जातक को भवन, वाहन इत्यादि के सुखों में कमी आती है।

पंचम भाव

पंचम भाव मे बनने वाले सूर्य ग्रहण से जातक को संतान प्राप्ति में विलंब व संतान संबंधित चिंता प्रायः रहती है। जातक के यहां प्रायः पहला गर्भपात होने की संभावना रहती है।

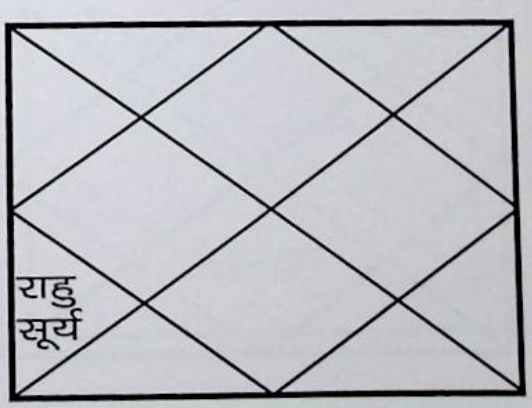

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

षष्ठ भाव

षष्ठ भाव में बनने वाले सूर्य ग्रहण से जातक को कुछ मध्यम फल प्राप्त होते है। जातक के शत्रु परास्त होते है।

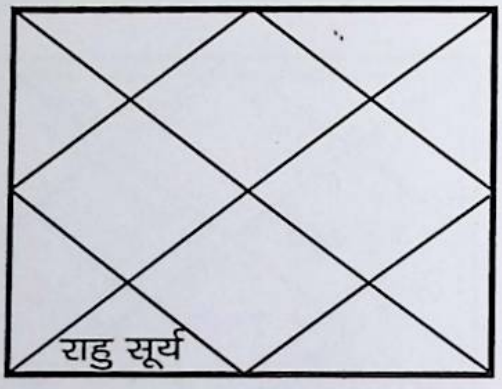

सप्तम भाव

सप्तम भाव में बनने वाले सूर्य ग्रहण से जातक के विवाह में रूकावट व एक बार संबंध विच्छेद होने के अवसर होते है। साझेदारी भी जातक के लिए उपर्युक्त नहीं होगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अष्टम भाव

अष्टम भाव में बनने वाले सूर्य ग्रहण से जातक के रोग का नाश होता है। जातक को प्रायः वात रोग हो सकता है।

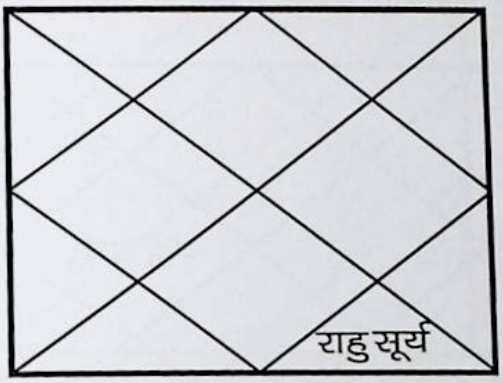

नवम भाव

नवम भाव में बनने वाले सूर्य ग्रहण से जातक के भाग्य में हानि होती है। जातक के प्रयत्न प्रायः असफल होते है।

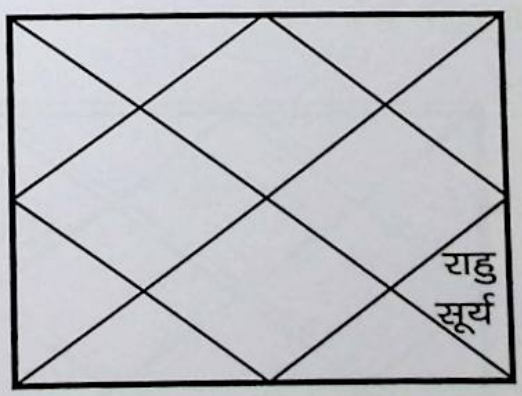

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशम भाव

दशम भाव में बनने वाले सूर्य ग्रहण से जातक के पिता को कष्ट होता है। कार्य क्षेत्र में जातक को उच्चाधिकारियों को कोप भाजन बनना पड़ता है।

एकादश भाव

एकादश भाव में बनने वाले सूर्य ग्रहण से जातक को अचानक हानि होने की संभावनाए रहती है। प्रायः जातक को पहले कुछ लाभ प्राप्त होता है एवं बाद में अचानक बहुत बड़ी हानि हो सकती है।

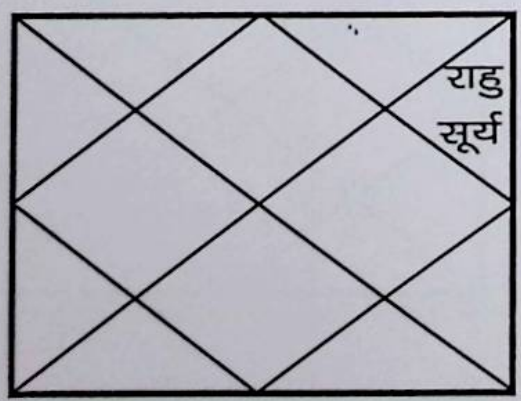

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वादश भाव

द्वादश भाव में बनने वाले सूर्य ग्रहण से जातक को मानसिक तनाव व व्यर्थ की चिंता सदैव रहती है।

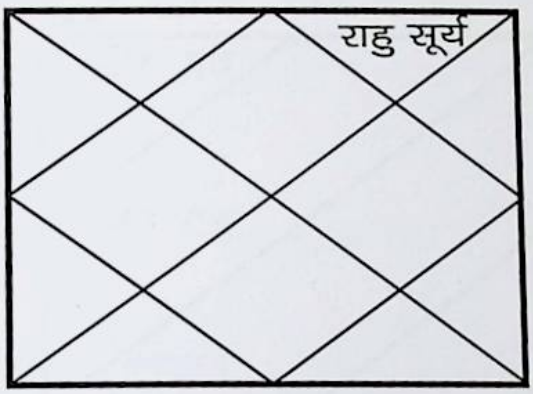

निवारण

2. चंद्र ग्रहण

प्रथम भाव

प्रथम भाव मे बनने वाले चंद्र ग्रहण से जातक का मन विचलित रहता है। उसका शरीर दुर्बल रहता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वितीय भाव

द्वितीय भाव मे बनने वाले चंद्र ग्रहण से जातक का कुटुंब से संघर्ष रहता है।

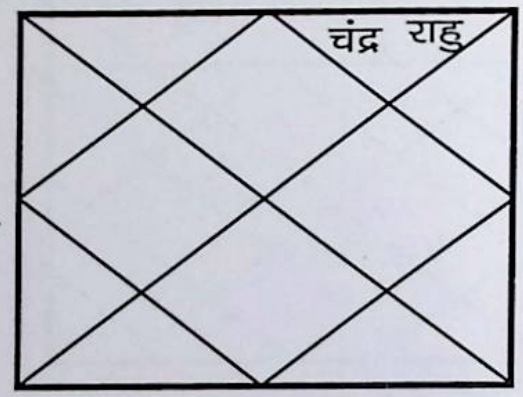

तृतीय भाव

तृतीय भाव में बनने वाले चंद्र ग्रहण से जातक डरपोक होता है।

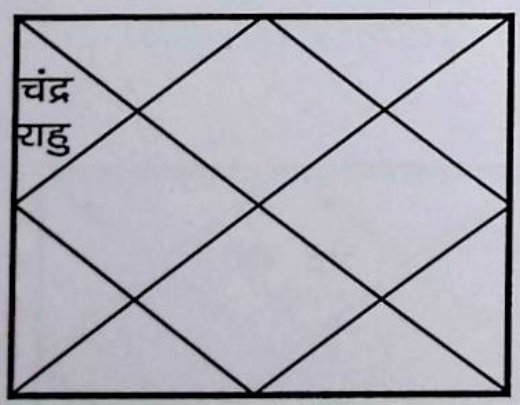

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर्थ भाव

चतुर्थ भाव में बनने वाले चंद्र ग्रहण से जातक की माता को कष्ट रहता है। जातक को माता का सुख प्राप्त नहीं हो पाता।

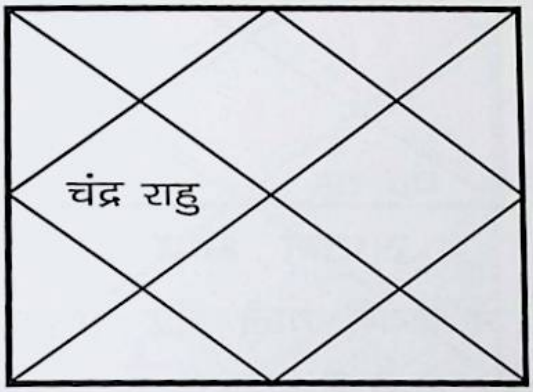

पंचम भाव

पंचम भाव में बनने वाले चंद्र ग्रहण से जातक को संतान संबंधी चिंता सदैव रहती है।

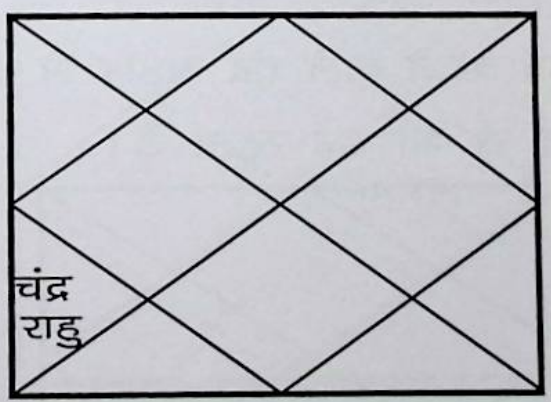

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

षष्ठ भाव

षष्ठ भाव में बनने वाले चंद्र ग्रहण से जातक ऋणमुक्त रहता है।

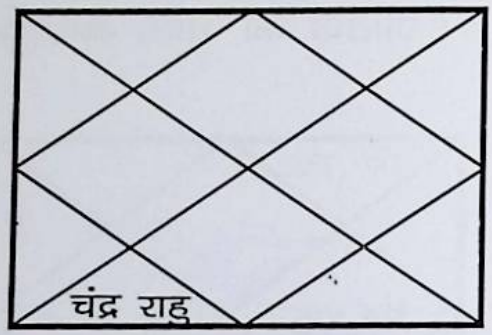

सप्तम भाव

सप्तम भाव में बनने वाले चंद्र ग्रहण से जातक को पत्नि सुख में कमी होती है।

अष्टम भाव

अष्टम भाव में बनने वाले चंद्र ग्रहण से जातक भयभीत रहता है उसे जल से भी ड़र रहता है।

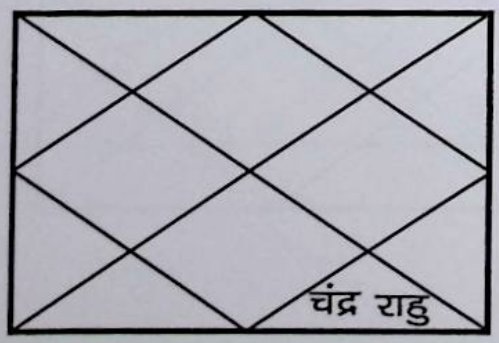

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नवम भाव

नवम भाव में बनने वाले चंद्र ग्रहण से जातक के भाग्य में अनेक प्रकार की रूकावट आती है।

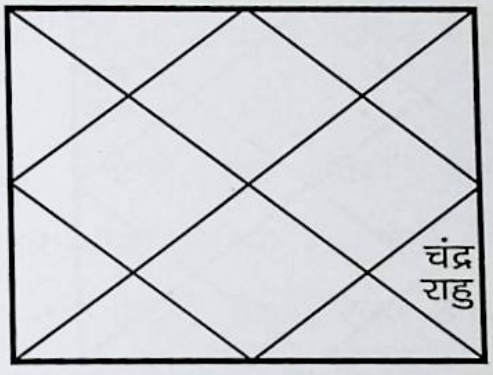

दशम भाव

दशम भाव में बनने वाले चंद्र ग्रहण से जातक कार्य तीर्व गति से किन्तु अपूर्ण करता है।

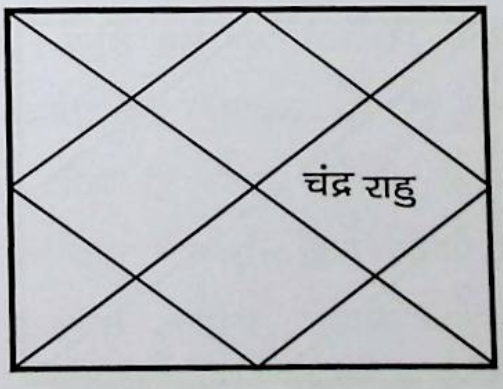

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एकादश भाव

एकादश भाव में बनने वाले चंद्र ग्रहण से जातक को अनेक बार हानि होती है।

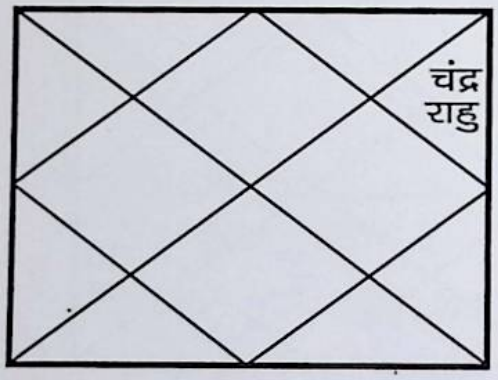

द्वादश भाव

द्वादश भाव में बनने वाले चंद्र ग्रहण से जातक असमंजस में रहता है। व्यर्थ के ख्यालों से जातक परेशान रहता है।

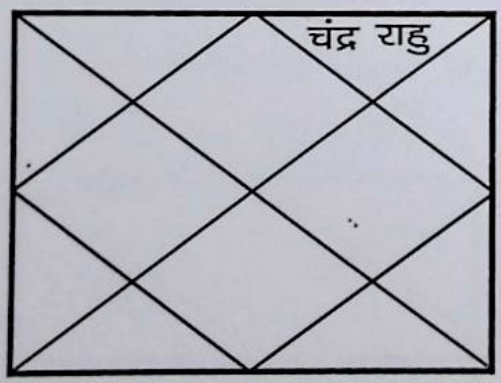

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्वालामुखी मूल

नीचे कुछ योग दिये गये है जिन्हें ज्वालामुखी मूल कहा गया है। ज्वालामुखी मूल में जन्में जातक को नक्षत्र दोष होता है एवं वह बताये गये प्रभावों में रहता है। ज्वालामुखी मूल, मूल नक्षत्रों से भी ज्यादा गंभीर परिणाम देते है।

शुक्र रोहिणी, मघा रविवार, आश्विनी है
बुधवार अश्लेषा मंगलपड़ें रेवती है
शनिवार भये विवाहे जिन सिया खेत न बीजों आय
पिया जाय परदेश–लौटकर न घर को आवे।

अर्थात् शुक्रवार को रोहिणी नक्षत्र में, बुधवार को आश्विनी, आश्लेषा यदि मंगलवार को हो या रेवती शनिवार के दिन यदि किसी स्त्री जातक का विवाह हो तो उसकी जिन्दगी सीता के समान है। खेत में बीज बोने पर आय की प्राप्ती नही होगी। यदि स्त्री जातक का पति विदेश / परदेश जायें तो फिर कभी भी लौटकर वापस नहीं आता है।

रवि शनि मंगल तीन ही रेखा, कृतिका रोहिणी और आश्लेषा
चौथ अमावस चौदस नवमी– इन योगों में कन्या जन्मी
कुल में होय कलंक लगाये, अपने जन को दोष लगायें
पुर रहे तो रहेगा कोरा और कुटुंब बन को सूरा
कोट कुटुंब में रहे न जाई नाम घर न विप्रको खाई।।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थात रविवार को कृतिका नक्षत्र, शनिवार को रोहिणी तथा मंगलवार को आश्लेषा नक्षत्र को रिक्ता तिथियां अर्थात् चतुर्थी, नवमी या चतुर्दशी हो तो ऐसे समय में यदि कन्या का जन्म हो तो वह अपने कुल को कलंक लगाती है। यदि पुत्र का जन्म हो तो वह भी जेब कतरा या बदमाश बनता है और अपने कुटुंब की मानहानि का कारण बनता है। ऐसा जातक अपने घर से दूर ही रहता है।

परमामूल, पांचे भरणी, आई कृत्तिका नौवें रोहिणी दस आश्लेषा
सुनले भई याये नक्षत्र ज्वाला मुखइया, जन्में ता जीवें नही
बसे तो राजे होय, कामिनी पहने चूड़ियाँ तो पुरूष विहीन होय।।

अर्थात् प्रतिपदा को मूल, पंचमी को भरणी नक्षत्र, नवमी को कत्तिका नक्षत्र एवं दशमी को आश्लेषा नक्षत्र को भी ज्वालामुखी मूल की संज्ञा दी गई है। इस नक्षत्र में जन्म लेने वाला जातक पैदा हो तो जीवित नहीं रहता और यदि जीवित रह गया तो राजा व कीर्ति पाता है। यदि कोई स्त्री का विवाह इन योगों में हो तो उसके पति की मृत्यु होती है।

पुष्य – पुर्नवसु नवमी सातें बालक जन्मा आधीरातें
आसपास घर उजाड़ करें, जीवन भर भ्रमित करें।

अर्थात् पुष्य नक्षत्र को सप्तमी व पुनर्वसु नक्षत्र को नवमी में यदि रात को बालक का जन्म हो तो जातक अपने आसपास में रहने वाले घरों को उजाड़ करता है। ऐसा जातक स्वयं जीवनभर भ्रमित रहता है एवं दूसरों को भी करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नक्षत्र व योगों से जनित दोष

आश्लेषा नक्षत्र

जब लड़के अथवा लड़की का आश्लेषा नक्षत्र के प्रथम चरण को छोड़ शेष तीन चरणों में जन्म हो तो विवाह के उपरांत सास का नाश होता है। यह प्रभाव सगी सास पर ही पड़ता है, सौतेली पर नहीं। प्रथम चरण सास के लिये शुभ है।

मूल नक्षत्र

यदि लड़के अथवा लड़की का जन्म मूल नक्षत्र के पहले तीन चरणों में हो तो विवाह के बाद ससुर का नाश होता है।

ज्येष्ठा नक्षत्र

ज्येष्ठा नक्षत्र में उत्पन्न कन्या अपने जेठ के लिये अशुभ कही गई है, अतः ऐसी कन्या का विवाह सबसे बड़े लड़के से ही करना चाहिये।

विशाखा नक्षत्र

विशाखा नक्षत्र का चतुर्थ चरण का जन्म लड़की के देवर का नाश करता है। अन्य तीन चरणों में शुभ है।

व्यतिपात योग

व्यतिपात योग में जन्म हो तो जातक आगे चलकर अंगहीन हो सकता है।

वैधृति योग

वैधृति योग में जन्मा जातक पिता के लिए अशुभ फल करता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिधि योग

परिधि योग में जन्मा जातक स्वयं के अरिष्ट होता है।

अन्य योग

मृत्युयोग, दग्धयोग, भद्रा, संक्रांति, सूर्य–चन्द्र ग्रहण का समय, शूल योग, व्याघात योग, गण्ड़ योग, वज्र योग, क्षय तिथि, क्षय मास आदि में जन्म अशुभ माना गया है।

एक ही नक्षत्र

पिता के जन्म नक्षत्र के दिन ही यदि पुत्र का जन्म हो तो यह अशुभ कारक है। इसमें पिता या पुत्र एक को भारी खतरा हो सकता है। इसी प्रकार यदि भाईयों का, बहनों का माता–पुत्री का एक ही नक्षत्र मे जन्म हो तो भी अशुभ मानना चाहिये।

त्रिखल जन्म दोष

जब किसी स्त्री के तीन लड़कियों के बाद लड़का या तीन लड़कों के बाद लड़की जन्में तो त्रिखल दोष होता है। यह अशुभ है। बेटा जन्मने से पिता को भय, बीमारी और धन हानि होती है। लड़की जन्मने पर माता के लिये भारी है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेलापक दोष

विवाह के पहले ज्योतिष में वर एवं वधु की जन्म पत्रिका मिलाने का विधान है। इसे मेलापक कहा जाता है। मेलापक में वर–वधु के परस्पर तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गण, भकूट और नाड़ी का विचार किया जाता है।

गण दोष

ज्योतिष शास्त्र में प्रत्येक व्यक्ति को देवता, मनुष्य या राक्षस गण मे विभाजित किया गया है। गण का निर्धारण जातक के जन्म नक्षत्र पर निर्धारित है। जिन जातक को जन्म आश्विनी, मृगशिरा, पुर्नवसु, पुष्य, हस्त, स्वाति, अनुराधा, श्रवण एवं रेवती नक्षत्र में हुआ है उनका गण देवता है। जिन जातको का जन्म भरणी, रोहिणी, आर्द्रा, पूर्वा फाल्गुनी, उत्तरा फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़, पूर्वाभाद्रपद एवं उत्तराभाद्रपद नक्षत्र में हो उनका गण मनुष्य है। जिन जातको का जन्म कृतिका, आश्लेषा, मघा, चित्रा, विशाखा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा तथा शतभिषा नक्षत्र में हो उनका गण राक्षस है।

वर एवं कन्या की जन्म पत्रिका को मिलाते समय गण दो। नहीं होना चाहिये। गण मैत्री के कुल अंक 36 में से 6 है। यदि वर व कन्या दोनों देवता गण के हो तो उन्हें सर्वाधिक 6 अंक प्राप्त होते है। इसी प्रकार यदि वे दोनों मनु य या दोनों राक्षस गण के हो तो भी उन्हें 6 अंक प्राप्त होते है। यदि वर मनुष्य व कन्या देव गण की हो तो उन्हें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5 अंक मिलते है। यदि वर राक्षस गण का हो एवं कन्या देव गण की हो तो उन्हें 1 अंक प्राप्त होता है। यदि कन्या मनुष्य गण की व वर राक्षस गण को हो तो उनका कोई गण नहीं मिलता इसलिये उन्हें 0 अंक दिये जाते है। इसी प्रकार कन्या राक्षस गण की हो एवं वर क्रमशः देवता व मनुष्य गण का हो तो भी उन्हें कोई अंक अर्थात 0 अंक दिया जाता है।

वर

कन्या / गण	देवता	मनुष्य	राक्षस
देवता	6	5	1
मनुष्य	6	6	0
राक्षस	0	0	0

नाड़ी दोष

ज्योतिष शास्त्र में जातकों की तीन प्रकार की नाड़ी का संदर्भ है। ये नाड़ियां निम्न है :-

1. आदि
2. मध्य
3. अंत्य

आदि नाडी

जिन जातकों को जन्म आश्विनी, आर्द्रा, पुर्नवसु, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, ज्येष्ठ, मूल, शतभिषा तथा पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र मे हुआ है उनकी नाड़ी आदि है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मध्य नाड़ी

जिन जातकों का जन्म भरणी, म गशिरा, पु य, पूर्वा फाल्गुनी, चित्रा, अनुराधा, पूर्वा ाढ़ा, धनि ठा तथा उत्तरा भाद्रपद नक्षत्रों में हुआ है उनकी नाड़ी मध्य है।

अंत्य नाड़ी

जिन जातकों का जन्म क त्तिका, रोहिणी, आश्ले ा, मघा, स्वाति, विशाखा, उत्तरा ाढ़ा, श्रवण एवं रेवती नक्षत्रों में हुआ है उनकी नाड़ी अंत्य है।

वर

कन्या	नाड़ी	आदि	मध्य	अंत्य
	आदि	8	8	8
	मध्य	8	0	8
	अंत्य	8	8	0

नाड़ी गुण व दोष

नाड़ी मिलान को ज्योतिष में सर्वाधिक 8 अंक दिये गये है। वर व कन्या दोनों की एक नाड़ी कभी नही होनी चाहिये। अर्थात् यदि वर की अंत्य व कन्या की भी अंत्य नाड़ी या वर की आदि व कन्या की भी आदि नाड़ी हो तो उन्हें नाड़ी दोष होगा तथा उन्हें 0 अंक दिये जायेंगे। यदि वर की आदि एवं कन्या की मध्य या अंत्य हो तो उन्हें 8 अंक प्राप्त होंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

योनि गुण व दोष

ज्योतिष शास्त्र में कुल 14 योनिया बतंलाई गई है। योनी का निर्धारण भी नक्षत्र के आधार पर होता है।

1. अश्व योनि

जिस जातक का जन्म आश्विनी या शतभिषा नक्षत्र मे हुआ हो उनकी योनी अश्व होगी।

2. गज योनी

जिस जातक का जन्म भरणी या रेवती नक्षत्र में हुआ हो उनकी योनी गज होगी।

3. मेष योनी

जिस जातक का जन्म कृत्तिका या पुष्य नक्षत्र में हुआ हो उनकी योनी मेष होगी।

4. सर्प योनी

जिस जातक का जन्म रोहिणी या मृगशिरा नक्षत्र में हुआ हो उनकी योनि सर्प होगी।

5. वानर योनी

जिस जातक का जन्म आर्द्रा या मूल नक्षत्र में हुआ हो उनकी योनी वानर होगी।

6. मार्जा योनी

जिस जातक का जन्म पुर्नवसु या आश्लेषा नक्षत्र में हुआ हो उनकी योनी मार्जा होगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. मूषक योनी

जिस जातक का जन्म मघा या पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में हुआ हो उनकी योनी मूषक होगी।

8. गौ योनी

जिस जातक का जन्म उत्तरा फाल्गुनी या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में हुआ हो उनकी योनी गौ होगी।

9. महषि योनी

जिस जातक का जन्म हस्त या स्वाति नक्षत्र मे हुआ हो उनकी योनी महषि होगी।

10. व्याघ्र योनी

जिस जातक का जन्म चित्रा या विशाखा नक्षत्र में हुआ हो उनकी योनी व्याघ्र होगी।

11. मृग योनी

जिस जातक का जन्म अनुराधा या ज्येष्ठ नक्षत्र मे हुआ हो उनकी योनी मृग होगी।

12. वानर योनी

जिस जातक का जन्म पूर्वाषाढ़ा या श्रवण नक्षत्र में हुआ हो उनकी योनी वानर होगी।

13. नकुल योनी

जिस जातक का जन्म उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में हुआ हो उनकी योनी अश्व होगी।

14. सिंह योनी

जिस जातक का जन्म धनिष्ठा या पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र म

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुआ हो उनकी योनी सिंह होगी।

योनी मिलान

नीचे दि गई सारणी के अनुसार योनी को मिलाया गया है। यदि वर व कन्या की एक ही योनी हो तो उसे श्रेष्ठ माना जाता है तथा उन्हें सर्वाधिक 4 अंक मिलते है। इसी प्रकार अन्य योनी के आधार पर अंक दिये जाते है।

वर → / कन्या ↓	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जा	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	4	2	3	2	2	3	3	3	0	1	3	2	2	1
गज	2	4	3	2	2	3	3	3	3	1	3	2	2	0
मेष	3	3	4	2	2	3	2	3	3	1	3	0	3	1
सर्प	2	2	2	2	2	1	1	2	2	2	2	2	0	2
श्वान	2	2	2	4	4	1	1	2	2	1	0	2	2	1
मार्जा	3	3	3	1	1	4	0	2	2	1	2	2	2	2
मूषक	3	2	2	1	1	0	4	2	2	2	2	2	2	1
गौ	3	2	3	2	2	2	2	4	3	0	2	2	3	1
महिष	0	3	2	2	2	2	2	3	4	1	2	2	2	3
व्याघ्र	1	2	1	1	1	1	2	0	1	4	1	1	2	2
मृग	3	3	3	0	0	2	2	3	2	1	4	2	2	2
वानर	2	3	0	2	2	2	2	2	2	1	2	4	2	3
नकुल	2	2	3	2	2	2	2	2	2	2	2	2	4	2
सिंह	1	0	1	1	1	2	1	1	3	2	2	2	2	4

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भकूट

वर एवं कन्या का भकूट गुण भी मिलाया जाता है। भकूट से तात्पर्य प्रायः उनकी राशि से है। भकूट को न अंक दिये गये है। निम्न तालिका द्वारा वर व कन्या के भकूट गुणों का मिलान किया जा सकता है।

वर → / कन्या ↓	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
मेष	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0
वृषभ	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7
मिथुन	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0	7
कर्क	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0	0
सिंह	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7	0
कन्या	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0	0	7
तुला	7	0	0	7	7	7	0	7	0	7	0	0
वृश्चिक	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7	0
धनु	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7	7
मकर	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0	7
कुंभ	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7	0
मीन	0	7	7	0	0	7	0	0	7	7	0	7

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्ण

वर्ण 4 प्रकार के है जैसे – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य एवं शुद्र। यह राशि के आधार पर होता है। कर्क, वृश्चिक तथा मीन राशि मे जन्में जातक का वर्ण ब्राह्मण है। मेष, सिंह तथा धनु राशि में जन्में जातक का वर्ण क्षत्रिय है। वृषभ, कन्या तथा मकर राशि मे जन्में जातक का वर्ण वैश्य है एवं मिथुन, तुला तथा कुंभ राशि मे जन्में जातक का वर्ण शुद्र है। वर्ण के अनुसार वर एवं कन्या की पत्रिका में उन्हें 1 अंक दिया जाता है। निम्न तालिका में यह दिया गया है।

वर

कन्या / वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शुद्र
ब्राह्मण	1	0	0	0
क्षत्रिय	1	1	0	0
वैश्य	1	1	1	0
शुद्र	1	1	1	1

वश्य गुण

वश्य भी राशि के अनुसार निर्धारित किया जाता है। कुल 5 प्रकार के वश्य होते है। ये चतुष्पद, मानव, जलचर, वनचर तथा कीर है। जिन जातकों को जन्म मेष, वृषभ तथा मकर राशि मे हुआ है उनका वश्य चतुश्पद है। मिथुन, कन्या तथा तुला राशि में जन्में जातक का वश्य मानव है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्क तथा मीन राशि में जन्में जातक का वश्य जल है। सिंह राशि में जन्में जातक का वश्य वनचर है तथा वृश्चिक राशि में जन्में जातक का वश्य कीट है।

वश्य के अनुसार गुण मिलान निम्न तालिका अनुसार किया है।

वर

कन्या	वश्य	च.	मा.	ज.	व.	की.
	चतुष्पद	2	1	1	0	1
	मानव	1	2	1	0	1
	जलचर	1	1	2	1	1
	वनचर	0	0	1	2	0
	कीट	1	1	1	0	2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

SHREE
MAHARSHI COLLEGE OF VEDIC ASTROLOGY
306, Arihant Plaza, Udaipole, UDAIPUR-313001, RAJASTHAN, (INDIA)
Phone : 0294-2427211, Mobile : 98292-43211
E-mail : mcvaadmission@gmail.com
website : www.mcvudaipur.com

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh